सम्पादकीय
पावन गुरुसत्ता को दस हजार हीरों का हार पहनाने की तैयारी 2

वृक्षगंगा अभियान
गुरुपर्व से आरम्भ हुआ वृक्षारोपण मास 3

नारी प्रशिक्षण शिविर
नारी सशक्तीकरण के संकल्प के साथ उभरा सक्रियता का उत्साह 4

आस्था का परिष्कार
शान्तिकुञ्ज वासियों ने निकाली वृक्ष काँवड़ जनजागरण यात्रा 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

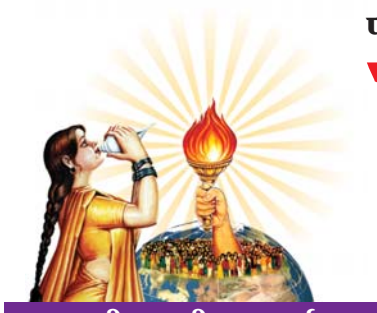

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अगस्त 2022

वर्ष : 35, अंक : 04
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 अगस्त 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

नारी-गौरव गाथा

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ

युग के नवसृजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँ

सुप्रसिद्ध विचारक अरस्तू का कथन है- *"नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है।"*

नारी विधेयात्मक शक्ति है। युग परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण प्रयोजन पूर्ण करने के लिए उसी को जगाना चाहिए, उसी को बढ़ाना चाहिए और विश्व-शांति के उपयुक्त वातावरण बनाने की उसी से याचना करनी चाहिए। नारी तत्त्व को प्रतिष्ठित-पूजित किए बिना हमारा उद्धार नहीं हो सकता।

नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है। उसकी विशेषता है-उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति। बेटी, बहिन, धर्मपत्नी और माता के रूप में वह परिवार के लिए जिस प्रकार उदात्त आदर्शों से भरापूरा जीवनयापन करती है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ प्रधान नर अपनी जगह ठीक है, पर आत्मिक संपदा की दृष्टि से वह नारी से पीछे ही रहेगा।

अगले दिनों द्रुतगति से बढ़ता आ रहा नवयुग निश्चित रूप से आध्यात्मिक मान्यताओं से भरापूरा होगा। मनुष्यों का चिंतन, दृष्टिकोण उसी स्तर का होगा, व्यवस्थाएँ और मान्यताएँ उसी ढाँचे में ढलेंगी। जनसाधारण की गतिविधियाँ उसी दिशा में उन्मुख होंगी, शासनतंत्र, धर्मतंत्र, समाजतंत्र और अर्थतंत्र का सारा कलेवर उसी स्तर का पुनर्निर्मित होगा। ऐसी स्थिति में नारी को हर क्षेत्र में विशेष भूमिकाएँ निभानी पड़ेंगी। विशेष उत्तरदायित्व सँभालने पड़ेंगे, कारण कि अध्यात्म की विभूतियाँ जन्मजात रूप में उसी को अधिक परिमाण में उपलब्ध हुई हैं।

अगले दिनों प्रतिभावान महापुरुषों की राष्ट्र को आवश्यकता पड़ेगी। वह वर्तमान पीढ़ी में से ही निकलेंगे। मातृशक्ति को जाग्रत्, सक्षम, आत्मबल से संपन्न और योग्य बनाने से ही वह सुयोग बनेगा। राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माण करने वाली माँ ही है। समाज के निर्माण में नारी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए उसे मनुष्य रूप में विकास करने का समान अधिकार दिया जाए, तभी वह भावी पीढ़ी का निर्माण दक्षतापूर्वक कर सकेगी और समाज का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा।

नारी स्रष्टा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। उसकी विशेषताओं को गिनाएँ तो मानव जगत उसके अनुदानों के नीचे दब जाएगा। त्याग, प्रेम, स्नेह, सम्मान, सहयोग, सहनशीलता नारी में नर से अधिक है। सारा परिवार, समाज नारी के सहयोग और सेवा से गतिशील है। स्रष्टा की सहयोगिनी शक्ति का नाम नारी है।

दिव्यता की कसौटी

नवजागरण की दिशा में नारी को बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है, यह बात अस्वीकार नहीं की जा सकती। अब नारी की दिव्य क्षमताओं को कसौटी पर कसे जाने की घड़ी आ पहुँची है। इस कसौटी पर नारी खरी उतरेगी भी, भले ही उसे इसके लिए दोहरा श्रम करना पड़े। उसे लंबे समय तक बंधनों में जकड़े रहने से पैदा हुए अपने पिछड़ेपन से मुक्ति पाकर अपनी योग्यता और क्षमता को विकसित करना होगा और नए निर्माण की भूमिका बनाने में भी हाथ बँटाना होगा। अपने विकास के लिए स्वयं अपने आप से संघर्ष करना होगा तथा मार्ग में रुकावट डालने वाली परिवार और समाज में फैली रूढ़ियों से भी निपटना पड़ेगा।

यह सब कठिन अवश्य है, लेकिन नारी इसे अवश्य कर लेगी, महाकाल ने उसे जो कार्य सौंपा है, उसे अपनी जन्मजात दैवीय क्षमताओं के सहारे वह निश्चित रूप से पूरा कर सकती है। विचारशील पुरुष वर्ग का भी पूरा समर्थन एवं सहयोग उसे मिलना चाहिए और वह मिलेगा भी।

पुरुषों की महती जिम्मेदारियाँ

समय की पुकार नारी जागरण अभियान को आँधी-तूफान की तरह व्यापक बना देने की है। उसे दावानल की भाँति द्रुतगामी और गगनचुंबी बनना चाहिए। नारी अग्रिम मोरचे पर खड़ी जरूर होगी, पर उसे इसकी सफल भूमिका निभा सकने की स्थिति तक पहुँचाने के लिए पुरुष को अपने घरों की नारियों को आगे बढ़ाना होगा। प्रोत्साहन, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, अवकाश देने से लेकर साधन जुटाने तक उसे परदे के पीछे रहकर पूरा-पूरा योगदान देना होगा। जनसाधारण के मस्तिष्क में नारी पुनरुत्थान की आवश्यकता, उपयोगिता बिठाने और उसे पद-दलित स्थिति में रखने की हानियाँ समझाने के लिए इतना बड़ा प्रचारतंत्र खड़ा करना पड़ेगा, जो शिक्षित और अशिक्षित नर और नारी सभी को वस्तुस्थिति समझा सके।

महिला जागरण का कार्य इतना महत्त्वपूर्ण है कि संघ शक्ति का उदय किए बिना और किसी शक्ति से संभव नहीं हो सकता। विचारशील व्यक्तियों को सोचना चाहिए कि यह नारी उत्थान का कार्य तब तक नहीं हो सकेगा जब तक नारियों को घर के कार्यों से फुरसत नहीं दी जाएगी। जो महिला बिना संरक्षक के घर के बाहर कभी नहीं निकली, वह घर-घर जाकर संगठन के कार्य को कैसे करेगी? फिर जिन घरों में जाएगी, शंका की दृष्टि से देखी जाएगी। इस प्रकार घर के लोगों की अप्रसन्नता का कारण भी बनेगी। अतः पुरुष वर्ग अपने घर की स्त्रियों को झिझक छोड़ने की प्रेरणा दें, चर्चा चलाएँ। बहू-बेटियों को धीरे-धीरे घर से बाहर जाने की अनुमति प्रदान करें और प्रोत्साहन दें। अपने घर की महिलाओं को साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित होने की सुविधा दी जानी चाहिए। पुरुष वर्ग को भी नारी जागरण का कार्य अपना ही कार्य मानकर अपनत्व भरे उमंग-उत्साह के साथ आगे बढ़ाना चाहिए।

नारी प्रगति के नाम पर कुछ हुआ तो जरूर है, पर उसे दिशा न मिलने के कारण उच्छृंखलता की ही वृद्धि हुई है। शिक्षा तो बढ़ी, पर उसके साथ-साथ फैशनपरस्ती, श्रम से अरुचि एवं शालीनता की अवज्ञा जैसे दोष-दुर्गुण जुड़ गए। फलतः वह लाभ न मिल सका जो शिक्षा की वृद्धि के साथ मिलना चाहिए था। शिक्षित नारी को अपने वर्ग की प्रगति के लिए कुछ तप-त्याग करना चाहिए था, किंतु दिशा न मिलने के कारण वैसा दर्द उनके दिल में पैदा न हो सका। शिक्षित नारी अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा बढ़ाने तक ही सीमित हो गई है।

प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ

आज की शिक्षित नारी के कंधों पर दोहरा दायित्व आ पड़ा है। प्रथम तो स्वयं उन निरर्थक बंधनों, वर्जनाओं और रूढ़ियों को तोड़ना है, जो उनके अस्तित्व को ही निगल लेना चाहते हैं। दूसरे अपनी बहिनों को जगाना है, उनकी उस सोई शक्ति को जगाना है, जिसके जाग्रत् हुए बिना नारी उत्थान, दूसरे शब्दों में समाज का उत्थान असंभव है।

नारी कैसे अपना खोया हुआ आत्मविश्वास पुनः प्राप्त करे, इसके लिए कई मोरचों पर उसे अपनी शक्ति लगानी पड़ेगी। इस मुक्ति संग्राम का शंखनाद कौन करे? सेना, हथियार और सैन्य-संचालन का महत्त्वपूर्ण दायित्व कौन निभाए? इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है-आज की शिक्षित नारी ही यह दायित्व उठा सकती है। यदि हमारे समाज की शिक्षित महिलाएँ स्वयं ही आगे आएँ तो नारी जाति को रूढ़िवादिता की संकीर्णता से, अंधपरंपराओं के बंदीगृह से, अशिक्षा और अज्ञान के अंधकार से सरलतापूर्वक उबारा जा सकता है।

स्कूल और कॉलेज की शिक्षा प्राप्त करने वाले को ही शिक्षित नहीं कहा जा सकता है। इसमें वे महिलाएँ भी शामिल की जाएँ, जो पढ़ी-लिखी तो बहुत कम है, किंतु नारी कल्याण के लिए जिनके हृदय में ज्वालामुखी धधक रहा है।

कुछ महिलाएँ बड़े प्रशासनिक अधिकारियों के परिवारों से संबंधित होती हैं, उन्हें अध्यापक, डॉक्टर या अन्य प्रशासनिक सेवाओं में बड़े-बड़े पद सहज ही मिल जाते हैं। उनके सामने जीवन की समस्याएँ प्रायः नहीं होती हैं। वे महिलाओं का राष्ट्रीय संगठन तैयार करने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है। जब तक समग्र रूप में कोई आंदोलन नहीं उठता है, तब तक पूरे राष्ट्र में कुछ क्रांति आई है, इसका पता नहीं लग पाता है। इसलिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में ही महिला जागरण अभियान चलाना चाहिए, इसी में नारी वर्ग का भला है।

धनाढ्य, पढ़ी-लिखी महिलाएँ समय की गुहार को पहचान कर अपने अहंकार को त्यागें और अपनी सुख-सुविधा को कम करते हुए उस बचत की राशि का उपयोग महिलाओं के कल्याण में समर्पित करने हेतु आगे आएँ।

जो महिलाएँ अर्थोपार्जन एंव परिवार की जिम्मेदारी के दोहरे उत्तरदायित्व से बोझिल हैं, उनके पास समय का अभाव है, लेकिन अपनी बहिनों की उन्नति के लिए वे भी आगे आएँ। शिक्षित महिलाएँ अपने क्षेत्र में जहाँ भी हैं, वहीं महिलाओं के उत्थान के लिए कम पढ़ी, किन्तु उत्साही बहिनों का सहयोग लेते हुए कार्य करें।

आम भारतीय नारियाँ यह भी नहीं जानतीं कि उनके कल्याण के लिए कौन-से कानून बने हैं? उन्हें कौन-से अधिकार मिले हैं तथा उनके लिए कौन-सी सुविधाएँ जुटाने हेतु क्या प्रयत्न किए जा रहे हैं? ऐसी जानकारियाँ नारी समाज में पहुँचाई जानी चाहिए और उन्हें बदली हुई परिस्थितियों से अवगत कराना चाहिए। ऐसी संस्थाओं से संपर्क स्थापित करके, रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए, जो आज राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के लिए बहुत कुछ कर रही हैं या कर सकती हैं।

जाग्रत् नारी को आगे बढ़कर नवयुग का संदेश सुनाने के लिए स्वयं चलकर गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले, दरवाजे-दरवाजे पर जाना होगा, तभी लंबे समय से सोई हुई सुषुप्त नारी में चेतना का संचार होगा। अनेक सामाजिक बुराइयाँ, रूढ़ियाँ, परंपराएँ आदि आम भारतीय नारी को संत्रस्त किए हुए हैं, उनके लिए संगठित रूप में उनके विरोध में प्रचार-प्रसार करना होगा। आवश्यकता पड़ने पर संघर्षात्मक कदम भी शिक्षित नारी ही उठाए। यह कार्य साहित्य, कला और भाषण के माध्यम से ही किया जाए। घर-घर संपर्क, प्रोत्साहन-पुरस्कार आदि के द्वारा शिक्षित नारी वर्तमान स्थिति की काया पलट कर सकती है।

पुस्तक 'प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ', पृष्ठ 4-14 से संकलित-सम्पादित

पावन गुरुसत्ता को दस हजार हीरों का हार पहनाने की तैयारी

जन्म शताब्दी वर्ष-2026 तक की सुनिश्चित लक्ष्य प्राप्ति के लिए हर जिले से है 50-50 प्राणवान युवाओं की आवश्यकता है

करवट ले रहा है यौवन

इन दिनों पूरे देश में नारी सशक्तीकरण प्रशिक्षण सत्र शृंखला चल रही है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, बिहार, झारखण्ड, गुजरात इत्यादि प्रान्तों में जिला स्तरीय 'युवा उत्कर्ष' सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। गत माह जम्मू कश्मीर प्रान्त स्थित राजौरी जिले के सुन्दरबनी में प्रथम युवा शिविर का आयोजित होना उत्तर भारत में युग निर्माण आन्दोलन के बढ़ते प्रभाव का अत्यंत उत्साहवर्धक संकेत है। युवा सक्रियता का ही प्रभाव है कि दक्षिण के सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में युगशक्ति का प्रेरणा-प्रकाश फैलाने के लिए विशाल चेतना केन्द्रों का निर्माण हो रहा है। देश के लाखों युवाओं के संगठित-समन्वित पुरुषार्थ से केवल उन युवाओं का ही जीवन नहीं बदल रहा, बल्कि उनके द्वारा समाज को अध्यात्म की ऐसी परिभाषा पढ़ाई जा रही है, जिसमें ढलकर पूरी मानवता सुख-चैन से रह सकती है। लोग अपने नैतिक कर्त्तव्य एवं मर्यादाओं का अनुभव करते हुए तथा जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए पूरे समाज को प्रगति पथ पर अग्रसर कर सकते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने एक प्रवचन में 'दस हजार हीरों का हार' पहनने की दिव्य आकांक्षा व्यक्त की थी। पिछले 10-12 वर्षों में युवा चेतना जागरण की दिशा में मिशन ने जो प्रगति की है, उसे देखते हुए पावन गुरुसत्ता की इस आकांक्षा को पूरा करने का सुयोग बनता दिखाई दे रहा है। युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज ने इस दिशा में योजनाबद्ध प्रयास और कार्यक्रम आरंभ कर दिए हैं। देशभर में हो रहे नारी सशक्तीकरण के कार्यक्रम एवं युवा सम्मेलनों में भी गुरुसत्ता की इस आकांक्षा को ध्यान में रखते हुए कार्ययोजना अपनाई जाए तो मिशन के आगामी अत्यंत महत्त्वपूर्ण पड़ाव-2026 (परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी एवं अखण्ड ज्योति के प्राकट्य की शताब्दी) तक यह लक्ष्य सुनिश्चित रूप से प्राप्त किया जा सकता है। जिस इष्ट-आराध्य के प्रति परम वंदनीया माताजी के जीवन का क्षण-क्षण एवं सामर्थ्य का कण-कण समर्पित रहा, उनकी दिव्य आकांक्षा को पूरा करने से बढ़कर परम वंदनीया माताजी के प्रति उनके बच्चों की श्रद्धाञ्जलि और क्या हो सकती है?

गुरुदेव की दिव्य आकांक्षा

संत, महापुरुष तो वीतराग होते हैं। उन्हें सांसारिक वस्तुओं की आकांक्षा कहाँ होती है? वे जो कुछ करते हैं, औरों की भलाई के लिए ही किया करते हैं। समर्थ रामदास द्वारा शिवाजी के समक्ष सिंहनी का दूध लाने की आकांक्षा व्यक्तिगत दिखती जरूर है, लेकिन थी नहीं। ऐसी कसौटियों पर खरे उतरने वाले शिष्यों को ही तो माँ भवानी का आशीर्वाद मिलता है और उनकी तलवार प्राप्त हुआ करती है।

द्रोणाचार्य ने एकलव्य से गुरुदीक्षा में उसका दाहिने हाथ का अँगूठा माँग लिया था। ऐसे पराक्रमी योद्धा से उसका अँगूठा माँग लेना लगता तो पक्षपात जैसा ही है, लेकिन गहराई से सोचा जाए तो इस कठिन परीक्षा ने एकलव्य को इतिहास में अमर कर दिया। एकलव्य की गुरुभक्ति के दृष्टांत आज भी दिए जाते हैं। अपनी धनुर्विद्या के आधार पर उसे यह कीर्ति शायद ही कभी मिल पाती।

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा हीरक हार पहनने की दिव्य आकांक्षा भी कुछ ऐसी ही प्रतीत होती है। इसके माध्यम से वे अपने बच्चों को उनके वास्तविक स्वरूप का बोध कराना चाहते हैं। वे युग निर्माण आन्दोलन से जुड़ी देवात्माओं के संदर्भ में लिखते हैं-

''प्रज्ञा परिवार के परिजन यों तो साधारण कामकाजों में संलग्न, मामूली स्थिति के लोग दीखते हैं, पर हम जानते हैं कि उनमें से अधिकांश ऐसे हैं जो जन्म-जन्मान्तरों से सुसंस्कारों की एक बड़ी पूँजी अपने साथ लिए हुए चले आ रहे हैं और अब भी उसे निरन्तर बढ़ाते चल रहे हैं। पचास वर्षों की खोज और चेष्टा का परिणाम है कि लाखों लोगों को प्रयत्नपूर्वक स्नेह सूत्र में पिरोकर एक सुन्दर हार जैसा विनिर्मित किया गया है।'' (वाङ्मय 66, पृष्ठ 2.72)

बात बिलकुल स्पष्ट है। जिनके हृदय में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के प्रति आत्मीयता के भाव उमड़ रहे हैं, जिनके मन में युग निर्माण आन्दोलन के लिए कुछ कर-गुजरने की हूक उठ रही है, वे सभी सामान्य-सा पशुवत् जीवन जीने के लिए नहीं, एक महान दैवी प्रयोजन को पूरा करने के लिए पैदा हुए हैं। उन्हें अन्तरात्मा की पुकार को अनसुनी नहीं करना चाहिए। संशय और प्रमाद में समय व्यतीत कर जीवन व्यर्थ गँवा दिया गया तो इसे दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना ही कहा जाएगा।

शान्तिकुञ्ज की अभिनव पहल

परम पूज्य गुरुदेव की अपनी जन्म-जन्मान्तरों की साथी देवात्माओं से कुछ अपेक्षाएँ रही हैं, लिखते हैं-

''जिस प्रकार अध्यात्मवाद, साम्यवाद, भौतिकवाद आदि अनेक 'वाद' कोई संस्था नहीं, वरन् विचारधारा एवं प्रेरणा होती है, व्यक्ति या संगठन इन्हें अपने-अपने ढंग से कार्यान्वित करते हैं, इसी प्रकार युग निर्माण कार्यक्रम एक प्रकाश-प्रवाह एवं प्रोत्साहन उत्पन्न करने वाला एक मार्गदर्शक बनकर विकसित होगा। 'गायत्री परिवार' उसकी प्रथम भूमिका सम्पादित करने का प्रयत्न ही कर सकेगा। पीछे तो इसका विस्तार अपरिमित क्षेत्र में होना ही है। अगणित व्यक्ति, संगठन, देश और समूह इस योजना को अपने-अपने ढंग से क्रियान्वित करेंगे।

युग निर्माण की प्रथम भूमिका का सम्पादन करने के लिए हमें अपने परिवार में आवश्यक जीवट दिखाई पड़ता है। इतना कार्य कर सकने की क्षमता उनमें मौजूद है, यह भली प्रकार सोच-समझकर, नाप-तौलकर ही कार्य आरम्भ किया गया है। 'लोकहँसाई' का हमें भी ध्यान है।''

(वाङ्मय 66, पृष्ठ 2.72)

युग निर्माण के प्रकाश-प्रवाह के संवाहक नररत्न ही सही मायनों में वे हीरे हैं, जिनका हार पहनने की इच्छा स्वयं परम पूज्य गुरुदेव ने व्यक्त की है। उनका संकेत इतना ही है कि युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े परिजनों को अपनी गौरव-गरिमा के अनुरूप प्रेरणा-प्रकाश का संवाहक होना ही चाहिए। उन्हें अपना मोल भी पता होना चाहिए और उनके व्यक्तित्व से हीरे जैसी आभा भी बिखरनी चाहिए। यदि खदानों से निकले हीरे की भाँति वे अनतराशे ही रह गए, तो फिर उनका उपयोग युग देवता के गले में पहनाने योग्य कीमती हार में जड़ने के लिए कैसे किया जा सकता है?

जन्म शताब्दी वर्ष-2026 को ध्यान में रखते हुए इन दिनों शान्तिकुञ्ज द्वारा विशेष सक्रियता अपनाई जा रही है। नारी सशक्तीकरण एवं युवा उत्कर्ष प्रधान कार्यक्रमों के माध्यम से ऐसे दैदीप्यमान हीरों की तलाश की जा रही है, जिनका हार युग देवता को पहनाने की गौरवानुभूति अखिल विश्व गायत्री परिवार कर सके। अपने मिशन की सक्रियता की दृष्टि से अग्रणी माने जाने वाले प्रत्येक जिले से 50-50 ऐसे युवक-युवतियों को चिह्नित एवं नामांकित जा रहा है जो गुरुआकांक्षाओं की कसौटी पर खरे सिद्ध हो रहे हैं। ये ऐसी प्राणवान आत्माएँ होंगी, जिनकी बुनियाद पर युग निर्माण योजना का भावी महल खड़ा होता दिखाई देगा।

हीरे जैसा व्यक्तित्व चाहिए

यहाँ जिन जीवन मूल्यों की चर्चा की जा रही है, वैसे तो उन्हें युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को अपनाना चाहिए, लेकिन उन मूल्यों की ओर ऐसे प्राणवान कार्यकर्त्ताओं का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया जा रहा है, जिनकी गिनती उनकी श्रद्धा, सक्रियता और समर्पण के आधार पर युग देवता को समर्पित किए जाने वाले 10,000 हीरकों में की जा सकेगी, जिनका हार युग देवता के गले में पहनाया जा सकेगा। ऐसे मनस्वी व्यक्तित्वों में ही आँधी-तूफानों के प्रवाह को पलटने की सामर्थ्य होती है। युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित प्राणवान कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि वे अपने व्यक्तित्व और अपनी सक्रियता को गुरु-आकांक्षाओं के अनुरूप उत्तरोत्तर प्रखर एवं प्राणवान बनाते हुए युग परिवर्तन के महायज्ञ में अग्रणी भूमिका निभाएँ।

लक्ष्य-भावनात्मक नवनिर्माण :
'युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम' वाङ्मय में परम पूज्य गुरुदेव का कथन है-

''विपत्तियाँ और विकृतियाँ भौतिक अवश्य हैं, पर उनका स्थायी समाधान दार्शनिक आधार पर ही किया जा सकता है। युग परिवर्तन का मूल उद्गम इसी पर केन्द्रित है। भगवान वह प्रक्रिया खड़ी करने जा रहा है, जिसमें मनुष्य को अशुद्ध चिन्तन के दुष्परिणामों का भान हो, अपनी भूल समझे और उसे सुधारने के लिए उलट पड़े। यह प्रक्रिया जिस क्रम से सम्पन्न होगी, उसी अनुपात से विकृतियों के समाधान अनायास ही अप्रत्याशित रूप से निकलते चले जाएँगे। नवयुग का आधार भावनात्मक नवनिर्माण ही है।'' पृष्ठ-1.15

स्पष्ट है कि हमारी जितनी भी गतिविधियाँ हैं, उनका केन्द्र बिन्दु जनमानस का परिष्कार एवं उसका भावनात्मक निर्माण ही है। परिष्कृत भावनाओं के आधार पर जनमानस में जो साधनात्मक एवं सृजनात्मक उत्साह उभरे उसे युग निर्माण योजना के सप्त आन्दोलन एवं शतसूत्री कार्यक्रमों में से किसी न किसी कार्यक्रम में लगा देना चाहिए, ताकि उनकी श्रद्धा-सक्रियता का पोषण, परिमार्जन, अभिवर्धन निरन्तर होता रहे।

प्राणवान व्यक्तित्व : हीरा उपयोगी तभी होता है, जब वह अपनी आभा से दूसरों को प्रभावित कर सके। बिना चमक पैदा किए हीरा मूल्यवान तो होता है, लेकिन उसके आभूषण नहीं बनाए जा सकते। इसी प्रकार नवयुग के सृजन सैनिकों को अपनी श्रद्धा-निष्ठा के साथ-साथ मिशन में उपयोगिता बढ़ाने का भी निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। आध्यात्मिक क्षेत्र में व्यक्तित्व में चमक उपासना, स्वाध्याय, संयम, सेवा से आती है और इसका प्रभाव साथी-सहयोगियों पर, जनमानस पर स्पष्ट दिखाई देता है। आदर्शों के प्रति निष्ठा तथा परम पूज्य गुरुदेव के बताए चार सूत्र-समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी एवं बहादुरी का अवलम्बन व्यक्तित्व को उदात्त बनाता है।

आभा मण्डल : जैसे हीरे का अपना एक आभा मण्डल होता है, जिसे वह अपनी चमक से आलोकित रखता है, उसी प्रकार प्राणवान प्रज्ञापुत्रों का भी अपना एक आभा मण्डल (कार्यक्षेत्र) होना चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव ने अपने बच्चों से 10-10 गाँवों की जागीरदारी सँभालने का आह्वान किया था। उसी प्रकार शक्तिपीठों से भी अपना कार्यक्षेत्र निर्धारित करने और उस क्षेत्र में जनमानस के परिष्कार के लिए निरंतर गतिविधियाँ चलाने का आग्रह किया जाता रहा है।

जिन हीरकों का हार युग देवता को समर्पित करने की योजना बन रही है, उन प्रत्येक से अपेक्षा रखी जा रही है कि किसी न किसी ब्लॉक/तहसील/जिला आदि स्तर पर उनकी सक्रियता सतत बनी रहे। वे मिशन के किसी न किसी आन्दोलन को गति देते हुए उसे उसके आदर्श स्वरूप तक विकसित करने के लिए प्रयत्नशील रहें और सन् 2026 तक उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकें।

नेतृत्व कौशल : नदी जब अपने उद्गम से निकलती है तो उसे मार्ग में पग-पग पर अवरोधों का सामना करना होता है। इन सब अवरोधों को पार करती हुई वह अपने लक्ष्य तक पहुँच ही जाती है। इसी प्रकार युग निर्माण आन्दोलन में भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। मिशन के हीरे जैसे व्यक्तित्व वह हैं जो अपनी सूझबूझ से समस्याओं समाधान स्वतः ही तलाशने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। देखा गया है कि आदर्श और अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी कार्यकर्त्ता विभिन्न विचारधाराओं के लोगों के बीच समन्वय स्थापित करने और सबका सहयोग प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं। वे अपनी प्रामाणिकता एवं आदर्श सक्रियता के बल पर सभी के प्रेरणास्रोत बनते देखे जाते हैं।

संघबद्धता : युग के प्रवाह को पलटने के लिए अपनी अंतरात्मा की पुकार पर विवेकपूर्वक निर्णय लेने और समाज की टीका-टिप्पणियों की परवाह किए बिना अकेले ही साहसपूर्वक चल पड़ने की आवश्यकता है। लेकिन हमें अपने पुनीत उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने संगठन के साथ चलने का अभ्यास भी बनाए रखना चाहिए। यह ठीक ऐसा ही है जैसे एक सैनिक का बलवान होना तथा अनुशासन का पालन करते हुए संघबद्ध होकर सेना को विजय दिलाना। हम केन्द्रीय मार्गदर्शन और गुरुअनुशासन में रहकर एवं उदात्त नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए ही समाज को बेहतर प्रेरणा दे सकते हैं, अभीष्ट छाप छोड़ सकते हैं।

अपना वंश बढ़ता चले (युवा जोड़ो अभियान) :
परम पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण आन्दोलन की सफलता का आधार अपनी आध्यात्मिक वंशवृद्धि को बताया है। वे लिखते हैं :-

''सर्वत्र अन्धकार की तमसाछन्न स्थिति सघन हो रही है। इस दीपावली की अमावस्या को दीपदान की आवश्यकता है। कम से कम हमें दस दीपक तो जलाने ही चाहिए। यह वंश वृद्धि इतनी पुण्य फलदायक होगी कि उससे स्वर्ग ले जाने वाले पिण्डदान की आवश्यकता भी सच्चे अर्थों में पूरी होती रहेगी।

अपना सम्पर्क अधिकाधिक लोगों से बढ़ाया जाए और यह संकल्प किया जाए कि इनमें नवनिर्माण के आदर्शों के प्रति निष्ठावान कम से कम दस व्यक्ति उत्पन्न करके ही दम लेगें। इसके लिए सौ से सम्पर्क साधना पड़ेगा, तब कहीं दस ऐसे निकलेंगे जिन्हें हम अपनी ही तरह निष्ठावान, भावनात्मक स्तर पर अपने ही वंशधर कह सकें।'' वाङ्. 66/3.27

यह अपनी गुरुनिष्ठा की परीक्षा एवं श्रेय-सौभाग्य के वरण की वेला है। देखना है परीक्षा की घड़ी में हमारा विवेक और साहस कितना साथ देता है? यदि गुरुसत्ता की आकांक्षाओं को पूरा करने में हम वीर शिवा और गुरुगोविंद सिंह के पंच प्यारों जैसा साहस दिखा सके तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।

गुरुपर्व से आरम्भ हुआ वृक्षारोपण मास, गतिशील हो गया वृक्षगंगा अभियान

पिछले चार वर्षों से वीरान भूमि के वनीकरण में कर रहे हैं सेना का सहयोग

पाँच घण्टे में रोपे 12000 पौधे

औरंगाबाद। महाराष्ट्र

गायत्री चेतना केन्द्र औरंगाबाद ने भारतीय सेना की बटालियन मराठवाड़ा इकोलॉजिकल टास्क फोर्स बटालियन का सहयोग करते हुए 22 जुलाई को मात्र पाँच घण्टे में 12000 पौधों का रोपण किया। उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार और सेना का यह लगातार चौथे वर्ष का अभियान था। दोनों के सहयोग से हर वर्ष 40 से अधिक प्रकार के हजारों पौधे रोपे जाते हैं। इस वर्ष भी 51000 पौधे लगाने का लक्ष्य है।

भारतीय सेना की यह बटालियन वीरान भूमि को सघन वनों में बदलने के लिए ही पूरी तरह समर्पित है। गायत्री चेतना केन्द्र औरंगाबाद के कार्यवाहक श्री राजेश टांक ने बताया कि वे उन्हें अपेक्षित मात्रा में उपयोगी पौधे विकसित करके देते हैं। पूरे जिले से आए गायत्री परिवार के सैकड़ों कार्यकर्त्ता वृक्षारोपण में सहयोग करते हैं। वृक्षारोपण के लिए जमीन तैयार करने और उनका कम से कम पाँच वर्ष तक संरक्षण करने की जिम्मेदारी सेना की होती है।

खुलताबाद तहसील के म्हैसमाल में हो रहे वृक्षारोपण का विहंगम दृश्य

- हर वर्ष लगाते हैं 40 से अधिक प्रकार के हजारों पौधे
- गायत्री चेतना केन्द्र औरंगाबाद में किए जाते हैं तैयार
- पूरे जिले से एकत्रित होकर कार्यकर्त्ता करते हैं वृक्षारोपण
- 51000 पेड़ लगाना है इस वर्ष का लक्ष्य

वृक्षारोपण अभियान में श्री राजेश टांक के अलावा लेफ्टिनेण्ट कर्नल मिथिल सुरेश जयकर, कार्यवाहक कमांडिंग ऑफिसर और सूबेदार मेजर चंद्रमा सिंह भी उपस्थित रहे। कर्नल जयकर जी ने बताया कि उनकी बटालियन द्वारा विगत वर्षों में रोपे गए लगभग 10 लाख पौधे भली भाँति विकसित हो रहे हैं।

20 गाँवों के कार्यकर्त्ताओं का सामूहिक पुरुषार्थ

कुण्डा धाम, शाहपुरा में रोपे 151 विकसित पौधे

जयपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार द्वारा इस वर्ष वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ 3 जुलाई से हुआ। उस दिन श्री श्री 1008 महंत श्री प्रहलाद दास जी महाराज द्वारा उनकी तपःस्थली-उनके आश्रम में वृक्षारोपण कर किया गया। इस अवसर पर गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने 100 पेड़ों की पौध रोपी।

महंत श्री प्रहलाद दास जी के आश्रम में वृक्षारोपण

वृक्षारोपण महाअभियान का दूसरा चरण दिनांक 10 जुलाई 2022 को सम्पन्न हुआ। इसमें माधव दास जी के स्थान कुंडा धाम, तहसील शाहपुरा में 151 पौधे रोपे गए। कार्यक्रम में 20 गाँवों से आए लगभग 100 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। अभियान का शुभारम्भ समर्पित स्वयंसेवक श्री विनोद कुमार शाह एवं श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल द्वारा पीपल और बरगद की पौध लगाकर हुआ।

वृक्षारोपण के लिए उदार सहयोग मिला

इस वर्ष जयपुर में वृक्षारोपण महा अभियान को सफल बनाने के लिए समर्थ समर्पित महानुभावों का शानदार सहयोग मिल रहा है। इस कार्य के लिए श्री सतीश भाटी ने दो लाख और श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने एक लाख रुपये का अनुदान दिया है। श्री भेरूलाल सामोता ने सिंचाई के लिए 1100 लीटर की पानी की टंकी दी और श्री प्रभात सामोता नयावास वालों ने 40 फव्वारों का प्रबंध किया। लगाए गए 300 पौधों की परवरिश गायत्री परिवार शाखा धवली जन सहयोग से करेगी।

वृक्षारोपण मास में चल रहा है जनसंपर्क, पौध वितरण अभियान

रायपुर को हराभरा बनाए रखने का संकल्प

रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार की रायपुर शाखा प्रतिवर्ष अपने क्षेत्रों को हराभरा रखने के लिए जुलाई-अगस्त माह को वृक्षारोपण माह के रूप में मनाती है। इसी कड़ी में युवा प्रकोष्ठ के द्वारा 17 जुलाई को देवेंद्र नगर में पौधा वितरण का आयोजन किया गया।

घर-घर पहुँचकर बाँटे पौधे

बण्डा में पौध वितरण करने निकली टोली

देवास में वृक्षारोपण करते परिजन

कार्यक्रम की शुरूआत पौधों का पूजन कर एवं उन्हें रक्षासूत्र बाँधकर हुई। तत्पश्चात् मंत्रोच्चारण के साथ एक फलदार एवं एक छायादार पौधों का रोपण कर किया गया। पौधों के वितरण के साथ स्थानीय निवासियों से इन पौधों को अपने-अपने घरों/प्रतिष्ठानों के आस पास लगाने एवं उसकी सुरक्षा करने का निवेदन किया गया, संकल्प दिलाए गए।

युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री आशीष राय ने बताया कि आज के समय में जितनी तीव्र गति से इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास हो रहा है, उतनी ही तीव्रता से वृक्षों की कटाई भी हो रही है, जो ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का मुख्य कारण है। यदि इस ओर ध्यान न दिया गया तो हमारा भविष्य संकट में पड़ जाएगा।

इसी उद्देश्य से आज नीम, बरगद, पीपल, आंवला, मीठा नीम, मोगरा के पौधों का वितरण देवेंद्र नगर में घर-घर जाकर किया जा रहा है। इस अवसर पर युवा प्रकोष्ठ से दुर्गेश्वरी निषाद, हंसराम साहू, सरिता साहू, सन्नू सांखला जी एवं देवेन्द्र नगर सोसाइटी के सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने गायत्री परिवार के अभियान की प्रशंसा की।

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बंडा ने वृक्षारोपण मास के अन्तर्गत बृहद् स्तर पर तरु प्रसाद वितरण का अभियान चला रखा है। समाचार मिलने तक इस अभियान के अन्तर्गत उन्होंने जिला उद्यान केन्द्र की नर्सरी से प्राप्त नीबू व अमरूद के 200 पौधे वितरित किए थे। ये पौधे इच्छुक गाँववासियों और विद्यालयों को दिए गए।

शक्तिपीठ पर उपलब्ध हैं 500 पौधे

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार देवास ने प्रस्तुत वर्षाऋतु में वृक्षगंगा अभियान का शुभारम्भ 18 जुलाई को वृद्धा आश्रम बसेरा में वृक्षारोपण के साथ किया। इस अवसर पर जिला पंचायत सी.ई.ओ. श्री प्रकाश सिंह चौहान की उपस्थिति में गायत्री महामंत्र का उच्चारण करते हुए जामुन, आम, सीताफल, आंवला, नीम आदि वृक्षों की पौध रोपी गई। जिला युवा समन्वयक श्री प्रमोद निहाले ने बताया कि अगले दिनों उनकी शाखा द्वारा शंकरगढ़ पहाड़ी, शीलनाथ धूनी, माता बीजाशन की पहाड़ी, जिला होमगार्ड कार्यालय, अवंतिका नगर जैसे अनेक प्रमुख स्थानों पर वृक्षारोपण किया जाएगा। गायत्री शक्तिपीठ में विभिन्न प्रजाति के 500 पौधों का स्टॉक कर लिया गया है, जिन्हें इच्छुक नगरवासियों को रोपण के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है।

वृक्ष काँवड़ यात्राओं ने बढ़ाई जनजागरूकता

तरुपुत्र महायज्ञ के साथ हुआ यात्रा का समापन

सीतापुर। उत्तर प्रदेश

सीतापुर में वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा निकाली गई। इसमें फलदार, फूलदार, छायादार तथा औषधीय महत्त्व के पौधों को शिवस्वरूप मानते हुए और उनके प्रति अपने भक्तिभाव का प्रदर्शन करते हुए उनकी काँवड़ यात्रा निकाली गयी। इसमें सीतापुर और लखीमपुर खीरी जनपद के सैकड़ों परिजनों ने भाग लिया। श्री अनुराग मौर्य ने बताया कि वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा शक्तिपीठ से आरंभ होकर लालबाग चौराहा, मंडी गेट होते हुए सहसापुर स्थित गायत्री चेतना केंद्र पहुँची, जहाँ पर तरुपुत्र महायज्ञ संपन्न किया गया। तरुयज्ञ के प्रसाद के रूप में एक-एक पौधा वितरित करके उनके पालन पोषण का संकल्प दिलाया गया।

सीतापुर में वृक्ष काँवड़ यात्रा निकालते प्रज्ञापुत्र

सीतापुर की वृक्ष काँवड़ यात्रा में श्री गंगासागर वर्मा ने वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा की उपयोगिता और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जनकल्याण के लिए समर्पित प्रयास ही शिव की सच्ची भक्ति है। वृक्षगंगा काँवड़ यात्राएँ परम्परागत काँवड़ यात्राओं से कहीं अधिक उपयोगी और उद्देश्यपूर्ण हैं।

झारखण्ड में 301 वृक्षों की कॉवड़ यात्रा निकली

नवाडीह, बोकारो। झारखण्ड

नवाडीह प्रखंड के युवाओं द्वारा सावन माह के पहले रविवार के दिन 301 पौधों की काँवड़ यात्रा निकाली गई, फिर उन पौधों का रोपण किया गया। इस कार्यक्रम में सैकड़ों उत्साही युवाओं ने भाग लिया। श्री धनेश्वर महतो के अनुसार ढोरी प्रखंड के मुख्य प्रबंधक श्री मनोज कुमार अग्रवाल, नावाडीह की प्रमुख श्रीमती पूनम देवी, श्री विश्वनाथ महतो आदि गणमान्यों ने इस पुनीत अभियान में शामिल होकर सबका उत्साहवर्धन किया।

वृक्षारोपण करते अधिकारीगण

आर.टी.ओ. कैम्पस में वृक्षारोपण

ऋषिकेश। उत्तराखण्ड

गायत्री परिवार ऋषिकेश द्वारा 18 जुलाई को आर.टी.ओ. कैम्पस में वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया। आर.टी.ओ. अधिकारी श्री अरविन्द पाण्डेय एवं अन्य अधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लेते हुए वृक्षारोपण किया। परिसर में 12 वृक्षों के पौधे लगाए गए। समारोहपूर्वक हुए वृक्षारोपण से सभी बहुत उत्साहित थे, सभी के मनों में पर्यावरण के प्रति जगारूकता बढ़ी।

श्रीराम स्मृति उपवन के वार्षिकोत्सव में 'पर्यावरण प्रेमी सम्मान' दिया

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी

महिला कॉलोनी गाँधीनगर, दिल्ली ने दिनांक 16 जुलाई को गायत्री दीप यज्ञ के साथ परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्री राम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन, नवग्रह वाटिका एवं औषधि वाटिका की स्थापना का वार्षिकोत्सव मनाया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रहे परिजनों को 'पर्यावरण प्रेमी सम्मान' प्रदान किया गया। आदरणीय विधायक श्री अनिल वाजपेयी, निगम पार्षद श्री संदीप कपूर, गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा के प्रभारी श्री प्रदीप दीक्षित एवं अनेक अन्य गणमान्य व्यक्तियों तथा पूर्वी दिल्ली गायत्री परिवार के परिजनों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। नवग्रह वाटिका की संचालन समिति के प्रभारी श्री मोहन गुप्ता, रेवंत प्रजापति, विप्रा के अध्यक्ष श्री कमल दाधिच, श्री अमित भटनागर, श्री मनोज शर्मा, श्री विजय माटोलिया, गायत्री परिवार गाँधीनगर शाखा के सभी सहयोगियों ने मौसम की प्रतिकूलता के बावजूद अपनी युग निर्माणी आस्थाओं का शानदार परिचय दिया।

कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित करते श्री प्रदीप दीक्षित जी

ईश्वर की दिव्य शक्ति का प्रतिनिधित्व नारी करती है। 'माँ' उसका मधुरतम नाम है। -ऐनीबेसेण्ट

नारी सशक्तीकरण के संकल्प के साथ उभरा सक्रियता का उत्साह

केन्द्रीय ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविर में आह्लादकारी अनुभूतियाँ हुईं

हल्दूचौड़, नैनीताल। उत्तराखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ हल्दूचौड़ में दिनांक 16 से 20 जुलाई 2022 की तिथियों में नारी सशक्तीकरण शिविर (कार्यकर्त्ता बहिनों का प्रशिक्षण शिविर) संपन्न हुआ। इसमें हल्दूचौड़, हल्द्वानी, बनबसा, रुद्रपुर, काशीपुर एवं अल्मोड़ा की 55 से अधिक बहिनों ने भाग लिया। प्रशिक्षण देने के लिए शान्तिकुञ्ज से श्रीमती रेखा गोस्वामी, श्रीमती गायत्री एवं श्रीमती तृप्ति यादव और सहयोगी साथी श्री नीरज तिवारी एवं श्री विवेक सिंह की टोली पहुँची थी।

शिविर का संचालन कर रही शान्तिकुञ्ज की बहिनों की टोली

यह कार्यक्रम प्रशिक्षु बहिनों में नव उल्लास का संचार करने वाला था। इससे पहले स्थानीय बहिनें पर्वों पर गायत्री शक्तिपीठ आती थीं, लेकिन शक्तिपीठ पर आवास का योग इससे पहले नहीं बना। यज्ञ कर्मकाण्ड, संभाषण, ढपली प्रशिक्षण के साथ यह अनुभव भी आह्लादकारी रहा। सभी ने शक्तिपीठ की दैनिक दिनचर्या ध्यान, यज्ञ, जप, नादयोग आदि में भाग लेकर अनुपम सौभाग्य की अनुभूति की।

शिविर का समापन 20 जुलाई को भव्य दीपयज्ञ के साथ हुआ। सभी 55 बहनों को भारतीय संस्कृति के जागरण हेतु समयदान का संकल्प कराया गया। उन्हें अपने मोहल्ले में जन्म दिवस, विवाह दिवस जैसे संस्कार विचार क्रांति के दीपयज्ञ के साथ मनाने की प्रेरणा दी गई।

महिला जागृति शिविर में त्रैमासिक सक्रियता के संकल्प उभरे

जबलपुर। मध्य प्रदेश

डॉ. सक्सेना

गायत्री शक्तिपीठ, मनमोहन नगर में एक दिवसीय महिला जागृति शिविर का आयोजन किया गया। इसमें महिला जागृति अभियान प्रभारी श्रीमती गीता डोंगरे ने बहिनों से साधना से व्यक्तित्व को निखारने और परिवार को संस्कारवान बनाने का आह्वान किया। गर्भ संस्कार अभियान की प्रांतीय प्रभारी डॉ. अमीता सक्सेना ने गर्भ संस्कार के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक महत्व की जानकारी दी। बाल संस्कार शाला अभियान प्रभारी श्रीमती इंदु राय ने बच्चों को संस्कारवान बनाने के सूत्र बताये।

इस शिविर में आगामी तीन महीनों की सक्रियता के महत्वपूर्ण संकल्प लिए गए। 24 बाल संस्कार शालाओं के संचालन एवं दस हजार से अधिक गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ बाँटने का निर्णय हुआ। इस वर्षा काल में 5100 पौधों के रोपण का लक्ष्य भी रखा गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती दीपिका मालवी ने किया ।

उपजोन स्तरीय गर्भोत्सव प्रशिक्षण कार्यशाला

डॉ. सरोज गुप्ता उपस्थित विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए

अलवर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ अलवर द्वारा दिनांक 17 जुलाई 2022 को जैन नसिया जी, गायत्री मंदिर रोड, अलवर पर गर्भोत्सव संस्कार प्रशिक्षण कार्यशाला एवं कार्यकर्त्ता संगठन सशक्तीकरण हेतु उपजोन स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर एवम करौली जिलों के परिजनों ने भाग लिया। लगभग 600 गायत्री परिजन, शहर की कई प्रसिद्ध महिला डॉक्टर्स, वकील, शिक्षिकाएँ और गणमान्य महिला-पुरुष गोष्ठी में शामिल हुए।

मुख्य चर्चा 'आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी' अभियान से आने वाली पीढ़ी को संस्कारवान बनाने पर हुई। विभिन्न स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल में जाकर महिला विद्यार्थियों और गर्भवती महिलाओं को

15 गर्भवती बहिनों का गर्भोत्सव संस्कार कराकर दिया गया प्रायोगिक प्रशिक्षण

गर्भावस्था में अपना और होने वाले बच्चे का कैसे ध्यान रखा जाए, इसकी जानकारी व्याख्यान और वीडियो के माध्यम से दी गई। प्रशिक्षित महिला चिकित्सक, नर्स, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ता और गायत्री परिवार की बहिनों से यह जिम्मेदारी उठाने का अनुरोध किया गया।

डॉ. सरोज गुप्ता, डॉ. राधेश्याम श्रोतिया ने विषयवस्तु का प्रतिपादन किया। श्रीमती विमला अरोड़ा, श्रीमती ज्योति गुप्ता, श्रीमती ममता गुप्ता की टोली ने गर्भ संस्कार का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। इसके अन्तर्गत पूर्व में ही पंजीकृत 15 गर्भवती महिलाओं का गर्भोत्सव संस्कार कराया गया।

युग परिवर्तन के महायज्ञ में युगधर्म निभाने को तत्पर है देश की तरुणाई

ओडिशा में प्रान्तीय सम्मेलन 'युवा उत्कर्ष'

केन्द्रीय प्रतिनिधियों के सान्निध्य में हुई प्रान्तीय संगोष्ठी

मंचासीन केन्द्रीय प्रतिनिधि एवं प्रान्तीय संगठन के गणमान्य कार्यकर्त्ता

भुबनेश्वर। ओडिशा

आगामी अक्टूबर माह में सम्पन्न होने जा रहे ओडिशा के प्रान्तीय सम्मेलन 'युवा उत्कर्ष' की तैयारियों को लेकर 17 जुलाई को भुबनेश्वर में एक प्रान्तीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। शान्तिकुञ्ज में युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे एवं जोन समन्वयक श्री शेषदेव जी की मुख्य उपस्थिति में सम्पन्न इस गोष्ठी में जोन, उपजोन एवं जिला समन्वयक स्तर के लगभग 250 युवक-युवतियों ने भाग लिया। प्रायः सभी ओडिया भाषी थे।

केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम का लक्ष्य, उसकी रूपरेखा तथा व्यवस्थाओं सम्बन्धी विस्तार से चर्चा की। इस संगोष्ठी में ओडिशा के मुख्यमंत्री के सहायक सचिव श्री शुभ्रांशु मिश्रा भी उपस्थित थे। उन्होंने भारत के भाग्य विधाताओं का पथ प्रदर्शन करने के लिए गायत्री परिवार के प्रयासों की सराहना की।

प्रान्तीय सम्मेलन की आयोजन समिति का गठन हुआ। प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ के कार्यालय का उद्घाटन भी केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने किया। श्री सन्तोष कुमार जेना को प्रान्तीय युवा प्रभारी बनाया गया।

महाराष्ट्र में आयोजित जिला स्तरीय युवा कार्यशालाएँ

अकोला। महाराष्ट्र : विचार क्रांति युवा प्रकोष्ठ अकोला द्वारा रेणुका देवी संस्थान, पातुर जिला अकोला में 17 जुलाई को जिला स्तरीय युवा जागरण कार्यशाला आयोजित की गई। इस में अकोला, पातूर, आगीखेड़, पिंपलखुटा, मोटाला गाँव के युवा बड़ी संख्या में उपस्थित थे। श्री संदीप काले, प्राचार्य श्री. सतीश वांडे, श्री गजानन दय्या, प्राध्यापक श्री अतुल वानखड़े, श्री संदीप नांदुरकर आदि ने युवा उत्कर्ष से सम्बन्धित विविध विषयों पर पॉवर पॉइण्ट के माध्यम से उत्साहवर्धक मार्गदर्शन दिया। मिशन के विविध रचनात्मक आन्दोलनों को भलीभाँति समझाया गया।

कार्यक्रम के अंत में सभी युवाओं ने युवा जागृति अभियान अखिल विश्व गायत्री परिवार के विविध उपक्रम जैसे युवा मंडल, वृक्षगंगा अभियान, बाल संस्कार शाला एवं विभिन्न गतिविधियों को अपने गाँवों में शुरू करने का संकल्प लिया। कार्यशाला में श्री सरनाइक काका और श्री शिवाजीराव देशमुख-पूर्व प्रधानाध्यापक का विशेष मार्गदर्शन मिला।

गायत्री शक्तिपीठ नागपुर में आयोजित शिविर को सम्बोधित करते श्री ओमप्रकाश राठौर

नागपुर। महाराष्ट्र

24 जुलाई को गायत्री शक्तिपीठ संत जगनाड़े चौक, नागपुर में जिला स्तरीय युवा जागरण कार्यशाला सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि श्री मनीष सत्यनारायण नुवाल एवं विशिष्ट मार्गदर्शक श्री ओमप्रकाश राठोर, युवा प्रकोष्ठ नागपुर से प्रदीप रेवतकर एवं श्री विजयसिंह सोलंकी ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। भारी बारिश के बावजूद जिले के 350 युवाओं की भागीदारी उत्साहवर्धक थी।

आकोला के शिविर की एक झलक

अपनी क्षमताओं को पहचानकर आध्यात्मिक पथ का अवलम्बन करते हुए उन्हें जाग्रत् करने तथा उनके माध्यम से देश, समाज एवं मानवता के हित में विविध आन्दोलनों को गति देने में सहयोगी बनने की प्रेरणा यह कार्यशाला देती रही। वक्ताओं के ओजस्वी प्रतिपादनों ने युवाशक्ति को झकझोरने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यशाला का सफल सूत्र संचालन कुमारी दीपाली त्रिपाठी ने एवं आभार प्रदर्शन श्री संदीप शिंदे ने किया।

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव की शानदार सफलता

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ द्वारा संचालित गायत्री विद्यापीठ ने भी सीबीएसई बोर्ड के परीक्षा परिणामों में अपनी सफलता के झंडे गाड़े। विद्यालय की अंकिता गुप्ता 98.40% अंक अर्जित कर जिले में प्रथम रही। गायत्री विद्यापीठ के कुल 14 छात्रा कु. अंकिता गुप्ता, प्रकृति अग्रवाल, विशाखा हिन्दूजा, तनिष्क मिश्रा, विधि पटेल, यशस्वी प्रभुने, याशमी देशमुख, साक्षी सोनी, मधुर सोनी, श्रेया चंद्राकर, संभव झाबक, आर्यन शर्मा, प्रियांश सांखला एवं निधि राजा ने प्रावीण्य सूची में स्थान बनाया। परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा।

जिले में प्रथम

अंकिता गुप्ता (98.40%)
जे.ई.ई. मेन्स की परीक्षा
प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण

विद्यालय के ऑडिटोरियम में भव्य समारोह का आयोजन कर सभी 14 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर सुरजन, श्रीमती सुषमा सुरजन, उपाध्यक्ष श्रीमती संध्यादेवी सिंघल, सचिव श्री हरीश गांधी सहित सभी अधिकारी-शिक्षकों ने बच्चों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं। वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों ने विद्यालय के वातावरण को अपनी सफलता के प्रमुख कारणों में से एक बताया।

जिला स्तर पर वरीयता प्राप्त विद्यालय के 14 विद्यार्थियों को शिक्षण समिति ने सम्मानित किया

छात्रों को सम्मानित करते प्रमुख अधिकारीगण

भावभरी श्रद्धांजलि

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार जिला उज्जैन के नींव के पत्थर, शक्तिपीठ नागदा के पूर्व प्रमुख ट्रस्टी, परशुराम आश्रम उज्जैन के संरक्षक सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री आन्नदीलाल शर्मा का 14 जुलाई को देवलोक गमन हो गया। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के संचालन में उनका विशेष सहयोग रहता था।

स्त्रियाँ पूजा के योग्य हैं, महाभाग हैं, घर की दीप्ति हैं। कल्याणकारी हैं। - मनुस्मृति 9/26

वाङ्मय स्थापना अभियान उपलब्धि

दैनिक भास्कर में हर दिन सम्पादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होता है परम पूज्य गुरुदेव का सद्वाक्य

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इन्दिरा नगर लखनऊ ने अपने विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत नगर के प्रायः सभी समाचार पत्रों के ब्यूरो में युगऋषि का सम्पूर्ण वाङ्मय स्थापित किया है। अनेक समाचार पत्र समय-समय पर उनमें से आलेख प्रकाशित करते रहे हैं और गुरुदेव के विचारों के संदर्भ से समाज को दिशा-प्रेरणा देते रहे हैं।

सभी क्षेत्रों में किए जा सकते हैं ऐसे प्रयास

सुप्रसिद्ध 'दैनिक भास्कर' ने हाल ही में एक प्रशंसनीय पहल की है। उनके द्वारा प्रादेशिक स्तर पर प्रकाशित होने वाले संस्करणों में सम्पादकीय आलेख के नीचे परम पूज्य गुरुदेव का एक सद्वाक्य उनके नाम एवं अपने मिशन के प्रतीक 'लाल मशाल' के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेव के एक-एक वाक्य ने लोगों का जीवन बदल दिया है। आशा की जाती है कि समाचार पत्र का यह प्रयास सामाजिक परिवर्तन की दिशा में प्रभावशाली सिद्ध होगा। इस सत्प्रयास के लिए गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर लखनऊ के व्यवस्थापक एवं विचार क्रान्ति अभियान के संयोजक श्री उमानन्द शर्मा साधुवाद के पात्र हैं, जिनके प्रायः सभी मीडियाकर्मी एवं समाज के गणमान्यों के साथ अच्छे सम्बन्ध होने का लाभ मिशन को मिल रहा है।

मीडिया से जुड़े देशव्यापी कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध है कि वे भी अपनी प्रतिभा और प्रभाव का उपयोग करते हुए विविध प्रिण्ट एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से समाज का ध्यान परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचारों की ओर आकर्षित करें।

प्रोजेक्ट दृष्टिकोण

सनबोर्ड पर लिखे सद्वाक्य लगाए

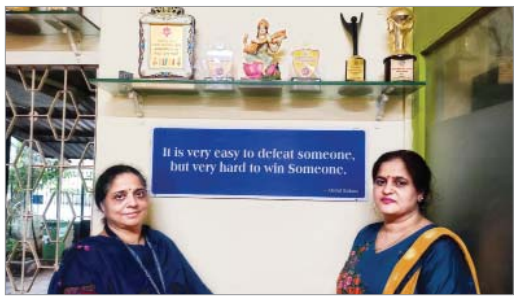

मुम्बई। महाराष्ट्र : दिया, मुम्बई ने 20 जुलाई को अपने 'प्रोजेक्ट दृष्टिकोण' के अन्तर्गत विद्यानिधि जूनियर कॉलेज, जुहू में पुस्तकालय, स्टाफ रूम, कॉरिडोर, प्रिंसिपल के कार्यालय में महान व्यक्तित्वों के प्रेरणादायक वाक्य वाले लैमिनेटेड सनबोर्ड स्थापित किए। सभी में नवचेतना का संचार करने वाले इन वाक्यों की खूब प्रशंसा हुई। सुश्री संगीता तिवारी और सुचिता शेट्टी ने सद्वाक्यों की डिजाइनिंग और स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

कृष्णा नर्सिंग एण्ड पैरा मेडिकल इंस्टीट्यूट, लखनऊ में वाङ्मय स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश : गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत 367वें वाङ्मय साहित्य सेट की स्थापना कृष्णा नर्सिंग एण्ड पैरा मेडिकल इंस्टीट्यूट, रायबरेली रोड लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में की गई। यह साहित्य समर्पित कार्यकर्त्ता श्रीमती मनोरमा पाण्डेय ने स्वास्थ्य लाभ, परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ भेंट किया। श्रीमती ऊषा सिंह ने छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक शिक्षिकाओं को अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की। इस अवसर पर अभियान के मुख्य संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने कहा कि युगऋषि का यह सद्साहित्य पीड़ा-पतन से मुक्ति दिला सकता है।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. तेजुल जे. चतुर्वेदी, डॉ. अनुराग चतुर्वेदी, श्री आशुतोष पाण्डेय के अतिरिक्त छात्र-छात्राएँ शिक्षक, शिक्षिकाएँ उपस्थित थे।

शक्तिपीठों पर सफल और लोकप्रिय रही हैं स्थाई प्रदर्शनियाँ

देवसंस्कृति दिग्दर्शन, पंजाबी विरासत-सहज स्वास्थ्य प्रदर्शनी दिग्दर्शन से

सैकड़ों गणमान्य एवं लाखों लोगों तक पहुँचा युगऋषि का मिशन

मोहाली। पंजाब

गायत्री शक्तिपीठ मोहाली में विचार क्रान्ति अभियान को गति देने के लिए लगभग तीन माह पूर्व से चल रहा विशेष प्रयोग बहुत लोकप्रिय सिद्ध हुआ है। शक्तिपीठ पर 16 अप्रैल 2022 से देवसंस्कृति दिग्दर्शन, पंजाबी विरासत-सहज स्वास्थ्य प्रदर्शनी लगाई गई है। इसे देखने के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में अलग-अलग वर्गों के लोग आते हैं। शिक्षक, विद्यार्थी, वैज्ञानिक, व्यापारी, चिकित्सक, जनप्रतिनिधि, कानूनविद हर वर्ग के लोगों को परम पूज्य गुरुदेव का जीवन दर्शन, भारतीय संस्कृति की उदात्त परम्पराएँ, पंजाब की गौरवशाली विरासत तथा सहज उपलब्ध वनौषधियों के माध्यम से स्वास्थ्य रक्षा की प्रेरणाएँ मिल रही है।

गणमान्य अतिथियों को प्रदर्शनी दिखाते और समझाते हुए श्री चंद्रमोहन शर्मा

इस प्रदर्शनी को देखने आए गणमान्यों में से कुछ नाम इस प्रकार हैं-बाबा फरीद यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेस फरीदकोट के कुलपति डॉ. राज बहादुर, श्री ए.पी. पाण्डेय आई.पी.एस. पंजाब के सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक, पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में डी.सी. मॉडल ग्रुप ऑफ स्कूल के निदेशक श्री बी.बी. गुप्ता, श्रीमती विजय शर्मा-पूर्व संयुक्त निदेशक उद्योग विभाग पंजाब, उत्तर भारत इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी मोहाली की प्राचार्य श्रीमती पूनम ठाकुर, श्री संजीव वशिष्ठ-मोहाली उद्योग संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष।

■ इस अद्वितीय प्रयोग की परिकल्पना और प्रदर्शनी तक गणमान्यों को लाकर इसे सफल बनाने में पंजाब के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री चंद्रमोहन शर्मा का प्रमुख योगदान रहा है।

कई शिक्षण संस्थानों के प्रमुखों ने अपने विद्यार्थियों को प्रदर्शनी का अवलोकन करने भेजा। श्री संजीव वशिष्ठ ने प्रदर्शनी से प्रभावित होकर गायत्री परिवार द्वारा सितम्बर 2022 में आयोजित किए जाने वाले संस्कार महोत्सव का सम्पूर्ण प्रबन्धन स्वयं करने की इच्छा व्यक्त की। इस कार्यक्रम में मुख्यतः पंजाब की ब्राह्मण सभा के परिवारों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न होना है।

इस प्रदर्शनी के समानान्तर मेडिकल कैम्प का आयोजन भी किया गया। इसके लिये कुरूक्षेत्र हरियाणा के सक्रिय कार्यकर्त्ता चिकित्सकों ने सेवाएँ प्रदान कीं।

डॉ. अशोक नेमा आगंतुकों को साहित्य की विशेषताएँ समझाते हुए

शक्तिपीठ के प्रवेश द्वार पर किया था तीन माह के लिए प्रयोग

प्रभाव और परिणाम देखते हुए एक वर्ष के लिए बढ़ाया

अब स्थाई रूप देने की तैयारी

भोपाल। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ भोपाल के प्रवेश द्वार पर 19 सितम्बर 2021 से लगभग एक माह के लिए एक पुस्तक मेला लगाया गया। पुस्तक मेला प्रभारी डॉ. अशोक नेमा की अपेक्षा यही थी कि शक्तिपीठ आने वाले हर दर्शनार्थी की नजर गुरुदेव के साहित्य पर अवश्य पड़े। प्रयोग सफल रहा, जिसे देखते हुए क्रमशः इसे एक वर्ष तक बढ़ा दिया गया। अब इसे स्थाई रूप देने का निर्णय कर लिया गया है। डॉ. अशोक नेमा इसकी लोकप्रियता के विषय में बताते हैं :-

- गायत्री माता के दर्शन करने आने वालों की दृष्टि बार-बार साहित्य पर पड़ती है। लोग पुस्तकें ले जाते हैं और पढ़कर उनके विषय में अपनी राय भी बताते हैं।
- प्रतिदिन दर्शन होने से उन्हें अपनी रुचि की पुस्तकें देखने-खोजने का अवसर मिलता है।
- विद्यार्थी महापुरुषों की जीवनियाँ और बाल निर्माण की कहानियाँ जैसे रोचक साहित्य के प्रति खूब आकर्षित होते हैं।
- समस्याएँ रोज नहीं आतीं। हर दिन की परेशानी अलग होती हैं, जिसका समाधान लोग अलग-अलग दिन खोजते हैं।

इन सब कारणों से सामयिक पुस्तक मेलों की अपेक्षा यह प्रयोग अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ है।

100 बाल संस्कार शाला चलाएँगे

महासमुंद। छत्तीसगढ़

26 जून को गायत्री शक्तिपीठ महासमुंद में गायत्री परिवार की जिला स्तरीय बैठक हुई। मुख्य विषय भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को हर विद्यालय में लोकप्रिय कर भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का लक्ष्य निर्धारित करना था। इस कार्य के लिए समिति का गठन हुआ।

इस बैठक में महासमुन्द जिले में 100 बाल संस्कार शाला संचालित करने एवं 5000 पौधारोपण करने का निर्णय भी लिया गया है। बैठक में बागबाहरा, पिथौरा एवं महासमुंद ब्लॉक से बड़ी संख्या में परिजन उपस्थित थे।

गायत्रीमय हो गया गाँव

उदयपुरवाटी, झुंझुनू। राजस्थान

उदयपुरवाटी के समीपवर्ती ग्राम धमोरा में 3 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम से पूरा गाँव गायत्रीमय हो गया। इस सार्वजनिक यज्ञ में उपस्थित ग्रामवासियों ने देश की खुशहाली एवं सामाजिक शांति के लिए यज्ञाहुतियाँ दी। गाँववासियों से व्यसन मुक्ति एवं वृक्षारोपण हेतु संकल्प भी कराए गए। यज्ञ का संचालन करते हुए गायत्री परिवार उदयपुरवाटी के कार्यवाहक श्री बजरंग लाल सोनी ने लोगों को गायत्री उपासना से उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया।

युगशक्ति गायत्री के प्रति ऐसे ही अदम्य उत्साह के साथ गायत्री प्रज्ञा पीठ भूरीकुड़ी में अनुशासन एवं समर्पण का पर्व गुरु पूर्णिमा अगाध श्रद्धा के साथ मनाया गया।

'दिया' की 'बाल उत्कर्ष' परियोजना पुनः प्रारम्भ

अणुशक्तिनगर, मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया अणुशक्तिनगर ने कोरोना त्रासदी के बाद 17 जुलाई को लगभग दो वर्षों के बाद अपने साप्ताहिक बाल संस्कार केंद्र का संचालन पुनः आरंभ किया। 'बाल उत्कर्ष' परियोजना के अन्तर्गत इस संस्कारशाला का उद्देश्य बच्चों में प्यार, पोषण एवं सहयोग प्रदान करने वाला दृष्टिकोण विकसित करना है। समय प्रबंधन, सुव्यवस्थित रहने की कला जैसी शिक्षाएँ केंद्र के प्राकृतिक परिवेश के मध्य बच्चों में उत्साह एवं तन्मयता का संचार करती रहती हैं।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

शिक्षा मंत्री से मिला प्रतिनिधि मण्डल

रादौर, यमुनानगर। हरियाणा

हरियाणा में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के आयोजन में प्रशासन का पूरा-पूरा सहयोग मिलता रहा है। इस वर्ष भी यही परम्परा जारी रखने के अनुरोध के साथ गायत्री परिवार का एक प्रतिनिधि मण्डल शिक्षा मंत्री माननीय श्री कंवरपाल गुर्जर से मिलने पहुँचा। मंत्री जी ने 22 अक्टूबर 2022 के दिन प्रदेश में परीक्षा आयोजित किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की और प्रदेश के शासकीय, गैर शासकीय विद्यालयों में इसे आयोजित करवाने के दिशा-निर्देश देने का आश्वासन दिया। प्रतिनिधि मण्डल में सर्वश्री सुभाष वर्मा, रविन्द्र शर्मा, राजेश भारद्वाज, रवि राणा, नीरू मित्तल, विनोद गुप्ता, सुरेश चौहान, एन.के. शर्मा शामिल थे।

शिक्षामंत्री को प्रार्थना पत्र सौंपते परिजन

जिला शिक्षाधिकारी का अभिनन्दन

यमुनानगर। हरियाणा

जगाधरी में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से सम्बन्धित जिला स्तरीय गोष्ठी सम्पन्न हुई। इसमें सर्वप्रथम जिला शिक्षा अधिकारी श्री प्रेम सिंह के प्रति आभार प्रकट किया गया, जिन्होंने जिले की सभी सरकारी स्कूलों के मुखियाओं को इस परीक्षा के आयोजन में सहयोग करने के लिए एक शासनादेश जारी किया है। तत्पश्चात् अब तक की प्रगति एवं भावी सक्रियता सम्बन्धी चर्चाएँ हुईं। सर्वश्री ईश्वर सांगवान, गंगाधर, धर्मवीर शर्मा, नीरू मित्तल, अश्विनी इस्सर, श्रीमती शारदा इस्सर, सतीश अरोड़ा, सुभाष वर्मा आदि गोष्ठी में प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कार्यकर्त्ताओं ने लक्ष्य प्राप्ति के लिए कमर कसी

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ पर 17 जुलाई को आयोजित गोष्ठी में भा.सं.ज्ञान परीक्षा में विद्यार्थियों की संख्या के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रत्येक राजकीय व निजी विद्यालयों में करने की योजना बनी, जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं। संगोष्ठी का संचालन श्री जगदीश जोशी ने किया।

गुरुपूर्णिमा पर्व समारोहों में साधना और संस्कारों के प्रति छाया रहा उत्साह

चेतना केन्द्र निर्माण के लिए मिला सहयोग

विशाखापत्तनम। आंध्र प्रदेश

गायत्री परिवार विशाखापत्तनम श्रीराम नगर, गाजुवका क्षेत्र में गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण के लिए प्रयत्नशील है। इसी योजना को ध्यान में रखते हुए उस क्षेत्र, जो कि मिशन की दृष्टि से बिलकुल नया है, में 17 जुलाई को 9 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। आधा किलोमीटर की परिधि में बसे सभी लोगों के घर-घर जाकर यज्ञ में भागीदारी का आमंत्रण दिया गया। गुरुसत्ता के सूक्ष्म संरक्षण में कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली रहा, 650 श्रद्धालुओं ने भाग लिया और मंदिर निर्माण में सहयोग का संकल्प लिया। साहित्य विक्रय भी संतोषजनक रहा। यज्ञ संचालन श्री अवतारम राजू, श्री महेश साहू, श्री अरुण कुमार और श्री आई. सिंह ने किया।

108 नए परिवारों में देवस्थापना हुई

काछोला, भीलवाड़ा। राजस्थान : गायत्री शक्तिपीठ काछोला पर गुरु पूर्णिमा पर्व 108 वेदीय यज्ञ एवं 108 नए घरों में देव स्थापना का कार्यक्रम रखा गया। प्रखर युवा कार्यकर्त्ता श्री हिमांशु पालीवाल ने पर्व संदेश देते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के जीवन आदर्शों की चर्चा की। उन्होंने उनका पालन करते हुए जीवन में अलौकिक आनन्द की अनुभूति करने एवं समाज के विकास में उल्लेखनीय योगदान देने का आग्रह याजकों से किया। प्रायः सभी प्राणवान कार्यकर्त्ता सर्वश्री लादू लाल स्वर्णकार दुर्गा लाल दाखेड़ा, वैद्यराज कैलाश वैष्णव, रामप्रसाद गट्टानी आदि ने यज्ञ में भाग लेकर मिशन के प्रति अपनी श्रद्धा-निष्ठा का शानदार परिचय दिया।

काछोला, भीलवाड़ा में देवस्थापना संस्कार कराते श्रद्धालु

101 गुरुदीक्षा संस्कार हुए

बदायूँ । उत्तर प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ बदायूँ पर पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ पावन गुरुपूर्णिमा पर्व धूमधाम से मनाया गया। श्री भवेश कुमार शर्मा ने उपस्थित श्रद्धालुओं की आस्था को पोषण देते हुए कहा कि गुरु व्यक्ति नहीं, वह शक्ति है, जो संस्कार, सद्ज्ञान देने के साथ शिष्य को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करती है। उनकी कृपा से जीवन सुमंगलमय हो जाता है। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र गुरुमंत्र है, इसके जप से व्यक्ति स्वतः सन्मार्ग की ओर प्रेरित होता जाता है।

इस अवसर पर 101 परिजनों ने गुरु दीक्षा ली। पुंसवन, विद्यारंभ एवं यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न हुए। श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मा ने शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में जिले भर में चलने वाले विभिन्न कार्यक्रमों से अवगत कराया। संचालन नरेंद्र पाल शर्मा ने किया।

बदायूँ में विश्व कल्याण की कामना के साथ दी गई आहुतियाँ

सृजनात्मक सक्रियता के सामूहिक संकल्प लिए

जमशेदपुर। झारखण्ड

नवयुगदल टाटानगर ने परम वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी-2026 के उपलक्ष्य में सृजनात्मक आन्दोलनों को गति देने के लिए जोरदार उत्साह के साथ गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया। पर्व के दिन सैकड़ों भाई-बहिनों ने भावभरे गुरुपूजन के क्रम में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए मानव मात्र के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की और यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं। यज्ञ मंजू मोदी, रूबी शर्मा तथा लक्ष्मण भगत की टोली ने सम्पन्न कराया ।

12 जुलाई को गुरुपर्व के उपलक्ष्य में 209 भाई-बहिनों ने मिलकर सामाजिक सुख-शान्ति एवं सबके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के साथ लगभग 24 लाख गायत्री महामंत्र जप किया। गायत्री ज्ञान मंदिर में सायंकाल प्रांतीय समन्वयक श्री संतोष कुमार राय, श्री संतोष श्रीवास्तव, श्री पुष्पेंद्र कुमार, सुश्री रेखा शर्मा, श्रीमती जसवीर कौर तथा सुश्री मंजू मोदी, श्री संजीव सिन्हा आदि प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में गुरु पूर्णिमा संकल्प दीप महायज्ञ रखा गया था। इस अवसर पर श्रद्धालु-साधकों ने निम्न सामूहिक संकल्प लिए।

- जन्म शताब्दी वर्ष-2026 को ध्यान में रखते हुए गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान को गति दी जाएगी।
- 25 सितंबर 2022 को पूरे प्रदेश में आयोजित होने वाले नवयुग दल के 50वें रक्तदान शिविर के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को जगाने का भरपूर प्रयास होगा।
- भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को पुनः सभी विद्यालय- महाविद्यालयों आरंभ कराएँगे।
- स्वर्णरेखा नदी स्वच्छता अभियान को सामूहिक आन्दोलन बनाकर गति दी जाएगी।

चंद्रायण व्रत साधना के संकल्प हुए

जबलपुर। मध्यप्रदेश

जबलपुर के गायत्री शक्तिपीठ, मनमोहन नगर एवं श्री नाथ की तलैया तथा अन्य स्थानों पर गुरु पूर्णिमा पर्व बड़े धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इन केन्द्रों पर नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ , गायत्री दीप यज्ञ, संगीत संध्या 'एक शाम गुरुवर के नाम' एवं 24 घंटे के अखंड जप के कार्यक्रम आयोजित हुए। इनके माध्यम से हजारों समर्पित साधकों ने पावन गुरुसत्ता के श्री चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। 75 श्रद्धालुओं ने गुरुदीक्षा ली।

जबलपुर में गुरुपूर्णिमा पर्व पर अनेक साधकों ने एक मासीय चंद्रायण व्रत साधना का संकल्प लिया। श्री प्रकाश मुरझानी ने कषाय-कल्मषों का निस्तारण करने वाली इस साधना के चमत्कारी प्रभावों की जानकारी दी। श्री सी. के. मिश्रा ने परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

200 छात्र-शिक्षकों ने गुरुदीक्षा ली

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

गुरु पूर्णिमा पर्व पर गायत्री शक्तिपीठ में परम्परा के अनुसार पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ, गुरु पूजन, दीक्षा संस्कार एवं अन्य संस्कार करवाये गए। पर्व समारोह में चित्तौड़गढ़ जिले से आए लगभग 2 हजार से अधिक गायत्री परिजनों ने भाग लिया। एक दिन पूर्व 12 घण्टे गायत्री महामंत्र का जप एवं शाम को दीप महायज्ञ संपन्न किया गया। रमेश चंद्र पुरोहित ने गुरुपूर्णिमा पर्व का संदेश दिया और गुरुदेव-माताजी की उनके शिष्यों से क्या अपेक्षाएँ हैं, यह बताया।

गुरुपूर्णिमा पर्व पर प्रतिवर्ष की भांति ही लक्ष्य सेंट्रल एकेडमी बस्सी के 200 से अधिक छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ ने दीक्षा संस्कार कराया। इस अवसर पर विद्यालय निदेशक श्री अशोक सोनी तथा पूरा स्टाफ उपस्थित रहा।

विद्यार्थियों को आत्मगौरव का बोध कराया

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ, केशर नगर में गुरूपूर्णिमा का पर्व पूर्ण श्रद्धा-भक्ति के साथ यज्ञ एवं विश्व शान्ति की प्रार्थना करते हुए मनाया गया। इस अवसर पर महर्षि वेदव्यास के साथ परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी तथा उनके पावन स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' का पूजन-वंदन किया गया। इस समारोह में कक्षा नर्सरी से 12वीं तक के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और सभी ने गुरूओं से आशीर्वाद प्राप्त किया।

शाला की प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर ने विद्यार्थियों से कहा कि गुरू के प्रति श्रद्धा, समर्पण व त्याग का भाव ही शिष्य को ऊंचाईयों पर आसीन करता है। आप बड़े ही सौभाग्यशाली हैं कि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के सूक्ष्म संरक्षण में आपकी शिक्षा-दीक्षा सम्पन्न हो रही है, जिनका संपूर्ण जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित रहा है।

प्रोजेक्टर के माध्यम से भी पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जीवन झांकी को बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

सवा लक्ष मंत्रलेखन अनुष्ठान की पूर्णाहुति

बरमकेला, रायगढ़। छत्तीसगढ़

प्रज्ञा मंडल ग्राम-बिलाईगढ़ (अ) द्वारा श्री विवेक पटेल के आवास पर तीन कुण्डीय यज्ञ के साथ गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया गया। इस असवार पर समर्पित साधिका श्रीमती लोपामुद्रा पटेल, धर्मपत्नी स्व. अमर सिंह पटेल ने अपने सवा लक्ष गायत्री महामंत्र लेखन अनुष्ठान की पूर्णाहुति की। एक महिला कार्यकर्त्ता द्वारा इतनी बड़ी संख्या में मंत्र लेखन किया जाना सभी के लिए प्रेरणादायी था। उनके आवास पर ही गुरुपर्व से एक दिन पूर्व सवा लाख गायत्री महामंत्र का अखंड जप भी रखा गया था।

इस कार्यक्रम में बरमकेला क्षेत्र के समस्त प्रमुख कार्यकर्ता भाई-बहिनों की उपस्थिति रही। रायगढ़ के श्री राम चरण सिदार की टोली ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री हेमेंद्र नायक ने पर्व संदेश दिया। प्रमुख कार्यकर्त्ता सर्वश्री क्षीरसागर पटेल, केदारनाथ डनसेना, बंशीधर वर्मा, श्री गिरजा शंकर गुप्ता जी, रामचरण बरेठ, राधेश्याम पटेल, फकीर पटेल आदि की उपस्थिति ने सभी का उत्साहवर्धन किया।

राघौगढ़, गुना। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ राघौगढ़ पर सभी गायत्री परिजनों द्वारा गुरुपूर्णिमा उत्सव को उल्लास और उमंग के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में 12 घण्टे का अखण्ड जप रखा गया। नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती आरती महेन्द्र शर्मा ने साधना सत्र के लिए अखंड दीप का प्रज्वलन किया। गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी श्री सुधीर शर्मा ने परम पूज्य गुरुदेव के बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने सप्त आन्दोलन-शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, प्राकृतिक संरक्षण, नारी जागरण, नशा निवारण, कुरीति उन्मूलन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए संकल्पित होकर कार्य करने पर जोर दिया। दो दिवसीय महोत्सव के अंतर्गत महिला मंडल के द्वारा गुरु भक्तिपरक भजन, विचार गोष्ठी का आयोजन भी हुआ।

बूंदी। राजस्थान

गायत्री परिवार बूँदी द्वारा गुरु पूर्णिमा पर्व पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ आत्म समीक्षा, आत्मावलोकन एवं श्रद्धा-समर्पण के अभिवर्धन के महत्व को समझाते हुए मनाया गया। 'गुरु की मनुष्य जीवन में भूमिका' विषय पर श्रीमती ऊषा शर्मा एवं श्रीमती दमयंती सिंह ने प्रभावी प्रेरणाएँ दीं। शक्तिपीठ के श्री सुरेश कुमार विजयवर्गीय ने शान्तिकुञ्ज द्वारा निर्देशित प्रमुख कार्यक्रम जैसे वृक्षारोपण, व्यसन मुक्ति-कुरीति उन्मूलन, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आदि के आयोजन से उपस्थित परिजनों को परिचित कराया। नारी सशक्तीकरण वर्ष की कार्ययोजना पर भी चर्चा हुई। कार्यक्रम में बूंदी जिले के जगह-जगह से परिजनों का मेला लगा रहा।

गुरुपादुका पूजन के साथ युग निर्माणी सत्संकल्पों पर हुआ गहन विचार मंथन

माणसा, गाँधीनगर। गुजरात

गायत्री शक्तिपीठ माणसा में नवयुग के सृजेताओं ने बड़े भक्तिभाव के साथ गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया। चार घण्टे तक चले पूजन में आसपास के 24 गाँवों के 750 लोगों ने भागीदारी की। श्रद्धालुओं ने भावी सक्रियता के संकल्पों के साथ गुरुदक्षिणा स्वरूप शान्तिकुञ्ज व तपोभूमि मथुरा के लिए उदारतापूर्वक अंशदान भी दिया।

शक्तिपीठ माणसा में 21वीं सदी का संविधान माने जाने वाले युग निर्माण योजना के सत्संकल्पों के आधार पर कथा का अनूठा कार्यक्रम हुआ। राजबाला बेन ब्रह्मभट्ट ने सत्संकल्पों की सहज ग्राह्य व्याख्या की। इनके माध्यम से वर्तमान जीवन में गायत्री उपासना एवं यज्ञ की आवश्यकता पर गहराई से चर्चा हुई। नारी सशक्तीकरण के लिए बहिनों से विशेष आह्वान किया गया। गुरुपर्वपूजन का कर्मकाण्ड श्री चिरागभाई पटेल तथा श्री मंगलभाई पटेल ने सम्पन्न कराया।

गृहस्थ जीवन एक तपोभूमि है। सहनशीलता और संयम खोकर कोई इसमें सुखी नहीं रह सकता।

गुरुपर्व पर आस्तिकता अभिवर्धन के लिए हुए प्रभावशाली कार्यक्रम

साधना पखवाड़ा मनाया

'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' का अनावरण

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ लंका में 'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' के अनावरण समारोह के उपलक्ष्य में साधना पखवाड़ा मनाया गया। इसी बीच दो दिवसीय गुरुपूर्णिमा महोत्सव भी आयोजित हुआ। गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुस्मारकों का अनावरण वरिष्ठतम प्रतिनिधि प्रो. श्याम नारायण मिश्र और उनकी धर्मपत्नी ने किया, डॉ. विंध्याचल सिंह व प्रो. अनिल अग्रवाल के नेतृत्व में पूजन क्रम संपन्न हुआ। तदोपरांत गुरुपर्व पूजन, गायत्री महायज्ञ, दीक्षा के संग अनेक संस्कार भी संपादित हुए।

गुरुपूर्णिमा पर्व के संदेश में डॉ. रोहित गुप्ता जी ने गुरुकार्य में तन-मन-धन से भागीदारी का संकल्प स्वयं लिया और सभी को प्रेरणा दी। मंचस्थ प्रतिनिधियों ने गुरुपर्व की महत्ता बताई। उन्होंने कहा कि आज वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत 'एक पौधा गुरुवर के नाम' जरूर लगायें। मंदिर व संस्कार व्यवस्था शक्तिपीठ से जुड़ी मातृशक्तियों ने सँभाली।

भजन संध्या — एक शाम गुरुवर के नाम

ग्वालियर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट के निर्देशन में 'तस्मै श्री गुरुवे नमः' शीर्षक से एक भजन संध्या 'एक शाम गुरुवर के नाम' का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विजय गोयल अध्यक्ष चेंबर ऑफ कॉमर्स ग्वालियर, विशिष्ट अतिथि श्री अमर सिंह तोमर चेयरमैन नागाजी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन तथा श्री उदय भंसाली चेयरमैन भंसाली ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज उपस्थित थे।

देवपूजन, अतिथि स्वागत एवं दीप प्रज्वलन के पश्चात कार्यक्रम संयोजक आर.के. चोपड़ा ने अतिथि स्वागत किया। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री योगेश शर्मा की टोली सद्गुरु-युगऋषि पं. श्री राम शर्मा आचार्य जी के जीवन दर्शन एवं कार्यकलापों की चर्चा करते हुए कहा कि जीवन में आध्यात्मिक प्रगति के द्वार सद्गुरु की कृपा से ही खुलते हैं। श्री विजय गोयल ने कहा कि व्यक्ति अपने अहंकार में गुरु की आवाज को नहीं सुनता। हमारे गुरुदेव हमेशा समय-समय पर सचेत करते रहते हैं। श्री अमर सिंह तोमर एवं श्री उदय भंसाली ने गायत्री परिवार के कार्यों के बारे में चर्चा की।

अतिथियों के उद्बोधन के पश्चात् शान्तिकुञ्ज की टोली ने गुरु की महिमा पर अनेक भजन प्रस्तुत किए। जिन्होंने टाउन हॉल में बैठे लगभग 400 भक्तों को भावविभोर एवं भावुक कर दिया।

चिकित्सा शिविर लगाया

गोधरा, पंचमहाल। गुजरात

गायत्री शक्तिपीठ गोधरा पर पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ बड़े हर्षोल्लासपूर्वक पावन गुरुपूर्णिमा पर्व के साथ मनाया गया। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने गुरुपादुकाओं का पूजन कर युगचेतना के विस्तार में अपने योगदान के संकल्प लिए।

गुरुपर्व के उपलक्ष्य में शक्तिपीठ पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया था। मधुमेह के 56 तथा उच्च रक्तचाप के 50 मरीजों ने इसका लाभ लिया। हरे कृष्ण लेबोरेटरी के संचालक श्री दिनेश रामचंदानी, डॉ. गिरीश पण्ड्या एवं डॉ. धरा पण्ड्या ने इसके लिए अपनी भावभरी सेवाएँ प्रदान की थीं।

मध्यान्नकाल में कई कई विद्यालयों में जाकर वृक्षोपण किया गया।

गुरुदेव-माताजी जैसे सद्गुरु का सान्निध्य सौभाग्यशालियों को ही प्राप्त होता है

गुरुपूर्णिमा पर्व समारोहों में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. भटनागर जी का संदेश

मुम्बई। महाराष्ट्र

17 जुलाई को मुंबई के ठाणे, दहिसर और खारघर उपनगरों में गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. प्रमोद भटनागर की उपस्थिति ने इन कार्यक्रमों की गरिमा बढ़ाई। वर्षा के कारण खराब मौसम के बावजूद कार्यक्रम शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुए।

ठाणे : ठाणे के रोटरी क्लब के सभागार में प्रथम कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पूरा सभागार खचाखच भरा था। यह कार्यक्रम युवाओं द्वारा ही आयोजित एवं संचालित था। बहिनों ने प्रज्ञागीत प्रस्तुत किए। मुंबई गायत्री परिवार के प्रमुख श्री मनु भाई ने अपने उद्बोधन से भावी लक्ष्य की याद दिलाई। यहाँ प्रो. भटनागर जी ने परम पूज्य गुरुदेव के 'बोओ और काटो' सिद्धान्त की चर्चा की। उन्होंने कहा कि गुरुदेव-माताजी जैसे सद्गुरु का सान्निध्य सौभाग्यशालियों को ही प्राप्त होता है। वे गए नहीं, यहीं हैं। उनकी सूक्ष्म चेतना आज भी पूर्ववत हम सबका मार्गदर्शन कर रही है। उनके प्रति श्रद्धा का आरोपण हर शिष्य को निहाल कर देता है।

दहिसर में कार्यक्रम बहिनों द्वारा आयोजित था। वहाँ पर युग निर्माण योजना के स्वरूप और कार्यक्रमों की चर्चा हुई।

खारघर : गायत्री परिवार खारघर और बी.ए.आर.सी. के संयुक्त पुरुषार्थ से खारघर में 'एक शाम गुरुवर के नाम' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. प्रमोद भटनागर की गरिमामय उपस्थिति रही। उन्होंने 'गुरु व्यक्ति नहीं, विचार है' विषय का प्रतिपादन करते हुए अपने स्वाध्याय में नियमितता लाने और गुरुदेव के विचारों को घर-घर पहुँचाने की प्रेरणा प्रदान की।

बी.ए.आर.सी. के प्रज्ञा गीत समूह द्वारा मधुर गीतों की प्रस्तुति ने सद्गुरुदेव के प्रति श्रद्धा-समर्पण के भावों को अंतस् की गहराइयों तक पहुँचाया। इस अवसर पर भव्य दीप यज्ञ के माध्यम से 24 सामूहिक विद्यारंभ संस्कार और 9 दीक्षा संस्कार भी संपन्न किए गए। सभी से मुंबई अश्वमेध यज्ञ में गरिमापूर्ण भागीदारी का आग्रह किया गया।इन कार्यक्रमों में 'दिया', मुम्बई के कार्यकर्त्ताओं का विशिष्ट योगदान रहा। तीनों स्थानों पर गुरुदीक्षाएँ भी हुईं।

खारघर में दीपयज्ञ के अवसर पर संदेश देते प्रो. प्रमोद भटनागर तथा ठाणे में गुरुसत्ता के प्रति अपने श्रद्धा-समर्पण की अभिव्यक्ति के लिए पहुँचे नवयुवक

जीवन में स्थिरता के लिए गुरुतत्त्व के प्रति आकर्षण जरूरी है

अणुशक्तिनगर, मुंबई। महाराष्ट्र

अणुशक्तिनगर मुंबई में गुरु पूर्णिमा पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री हितेश जोशी ने अपने प्रेरक संदेश में कहा कि जैसे धरती पर स्थिरता के लिए गुरुत्वाकर्षण की आवश्यकता होती है, वैसे ही जीवन में शान्ति एवं स्थिरता के लिए गुरुतत्त्व के प्रति आकर्षण होना जरूरी है।

प्रज्ञा गीत, दीप यज्ञ, गायत्री मंत्रों का सामूहिक जप, गुरु तत्व बोध के ध्यान और स्मरण ने सभी परिजनों के मन, हृदय और आत्मा को पोषित किया। इसने प्रतिभागियों को अपने जीवन को व्यवस्थित करने, लक्ष्यों को नवीनीकृत करने और आत्मा को फिर से जीवंत करने की प्रेरणा दी, संकल्प जगाए। प्रत्येक प्रतिभागी ने शुभ गुरुपूजन के माध्यम से युगिऋषि की सूक्ष्म और दिव्य शक्ति का अनुभव किया।

गुरुपूजन के साथ गुरुसत्ता का ध्यान कर रहे श्रद्धालु

दस गाँवों में श्रद्धापूर्वक मनाया गया गुरुपर्व

अलवर। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार कठूमर जिला अलवर ने तहसील के गाँव कांकरोली में नवनिर्मित गायत्री प्रज्ञापीठ, गायत्री परिवार कठूमर एवं अन्य शाखाओं के कर्मठ परिजनों के सहयोग से कांकरोली सहित आसपास के दस गांवों में गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में यज्ञ, दीप यज्ञ और गोष्ठी का आयोजन किया। इनके माध्यम से युवाओं और किशोरों को सदाचरण, ईमानदारी, बहादुरी और समझदारी अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। इसका प्रभाव ही रहा कि गायत्री प्रज्ञा पीठ कांकरोली गुरुपूर्णिमा के दिन आयोजित पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में कांकरोली सहित आसपास के 5 किलोमीटर तक के 250 से 300 गाँववासी सम्मिलित हुए।

> प्रज्ञापीठ के लिए भवन एवं भूमिदान दाता का सम्मान किया

इस अवसर पर प्रज्ञापीठ के लिए भवन और एक बीघा कृषि योग्य भूमि दान देने वाली श्रीमती नर्मदा देवी को गायत्री परिवार कठूमर की ओर से सम्मानित किया गया।

प्रज्ञापीठ कांकरोली द्वारा आयोजित गुरुपूर्णिमा पर्व

'गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई'

उन्नाव। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उन्नाव पर युगव्यास परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के व्यक्तित्व की महानता एवं करोड़ों परिजनों को मिले दिव्य अनुदानों का पावन स्मरण करते हुए गुरुपूर्णिमा पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाए गए इस पर्वोत्सव में शक्तिपीठ से जुड़े सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

शक्तिपीठ व्यवस्थापक एडवोकेट श्री सिद्धनाथ श्रीवास्तव ने पर्व संदेश में कहा कि श्री कृष्ण एवं सभी ऋषि-मुनि, महापुरुषों ने अपने सद्गुरुदेव के प्रति समर्पण, त्याग और अनुशासन के आधार पर ही महानता का वरण कर सके। सद्गुरु सदैव ईश्वरीय योजना के साथ समाज कल्याण के लिए अवतरित होते हैं। हम अपने गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के क्रान्तिकारी विचारों को समाज में फैला कर मानवता का उत्थान कर सके तो यह हमारी सार्थक गुरुभक्ति होगी।

श्री सुरेश मिश्रा ने बताया कि गुरु ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं साक्षात परमब्रह्म हैं। गुरु के बिना कोई भव निधि पार नहीं कर सकता है।

इस अवसर पर युवाशक्ति से युग निर्माण आन्दोलन से जुड़ने तथा समाज से पीड़ा-पतन निवारण के लिए सार्थक कदम उठाने का आह्वान किया गया। समाज में नवचेतना जगाने के लिए विगत 40 वर्षों से शक्तिपीठ द्वारा की जा रही सेवाओं से सभी को अवगत कराया गया।

शक्तिपीठ उन्नाव में गुरुपर्व के उपलक्ष्य में हुआ यज्ञ

माँ की ममता और करुणा दो ऐसे अनुदान हैं, जिन्हें पाकर मानवता जीवित रही, विकसित हुई और गौरवान्वित बनी है। - सन्त वास्वानी

शान्तिकुञ्ज वासियों ने वृक्ष काँवड़ जनजागरण यात्रा निकालकर समझाया शिवभक्ति का दर्शन

सावन का महीना भगवान भोलेनाथ की पूजा-अर्चना के लिए उत्तम माना जाता है। इसीलिए सावन में काँवड़ यात्रा का प्रचलन है। भक्तगण माँ गंगा के तट पर बसे तीर्थ क्षेत्रों में पहुँचते हैं और अपने साथ पवित्रता-निर्मलता का प्रतीक अमृततुल्य गंगाजल की काँवड़ साथ लेकर सैकड़ों किलोमीटर की कष्टसाध्य यात्रा कर अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध शिवालयों में पहुँचते हैं। वहाँ गंगाजल से भगवान शिव का अभिषेक कर उनकी कृपा से अपने जीवन की खुशहाली की प्रार्थना करते हैं।

करोड़ों काँवड़ यात्रियों का हरिद्वार आना यह दर्शाता है कि श्रद्धालुओं की आस्था में कमी नहीं है, लेकिन देखा यह भी गया है कि शिव की भक्ति का सही दर्शन उन तक नहीं पहुँच पाने के कारण अनेक विसंगतियाँ समाज में दिखाई देती हैं। ये विसंगतियाँ दूर होनी चाहिए, तभी सही मायनों में भक्तों पर शिवजी की कृपा संभव है।

श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब के निर्देशानुसार गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज ने 25 जुलाई को काँवड़ यात्रा की तरह ही एक जनजागरण यात्रा का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य उपरोक्त संदेश लोगों तक पहुँचाना था। यह वाहन यात्रा थी, जिसमें शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के सैकड़ों अंतेवासी कार्यकर्त्ता एवं प्रशिक्षणार्थी साधक शामिल हुए। गले में साहित्य एवं हाथों में प्रेरक सद्वाक्य के बैनर-पोस्टर एवं पत्रक लेकर उन्होंने यात्रा निकाली और जयघोष के साथ संपर्क में आने वाले काँवड़ियों-तीर्थयात्रियों को संदेश एवं साहित्य दिया।

यात्रा का शुभारम्भ व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी जी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। शान्तिकुञ्ज से रवाना होकर यह यात्रा भूपतवाला, हर की पौड़ी होते हुए रानीपुर मोड़ पहुँची और उसके पश्चात् देव संस्कृति विश्वविद्यालय और हरिपुर कलाँ होते हुए वापस शान्तिकुञ्ज लौटी।

परम्परागत काँवड़ियों के बीच से गुजरती शान्तिकुञ्ज की जनजागरण यात्रा

जनजागरण यात्रा ने दिया संदेश

- गंगाजल निर्मलता का प्रतीक है। सबके कल्याण की भावना रखें। अपने संपर्क क्षेत्र में गंदगी फैलने से बचें-बचायें।
- शिवजी द्वारा विषपान एवं भाँग, धतूरा आदि का सेवन किया जाना, श्रेष्ठ जनों द्वारा समाज को विसंगतियों से बचाने का प्रतीक है। बुद्धि को भ्रष्ट और घर-परिवार को नष्ट करने वाले हर प्रकार के नशे से बचें, अपना तथा अपनों का जीवन संकट में न डालें।
- गंगा की निर्मलता और वृक्षारोपण समय की सबसे बड़ी माँग है। गायत्री परिवार के निर्मल गंगा जन अभियान एवं वृक्षगंगा अभियान से जुड़कर अपनी सच्ची शिवभक्ति का परिचय दें।

माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी को अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से शुभकामनाएँ

श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी एवं श्रद्धेया जीजी ने नारी सशक्तीकरण वर्ष में माननीया मुर्मू जी के राष्ट्रपति बनने पर विशेष प्रसन्नता व्यक्त की।

मान. श्रीमती द्रौपदी मुर्मू भारत की राष्ट्रपति

माननीया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के भारत के राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित होने पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के करोड़ों अनुयायी-श्रद्धालु एवं कार्यकर्त्ताओं की ओर से शुभकामना संदेश प्रेषित किया। अपने संदेश में उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव की संकल्पना के अनुरूप जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, प्रान्त आदि की भावनाओं से ऊपर उठकर सतयुगी समाज की संरचना के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने का संकल्प व्यक्त किया। श्रद्धेय द्वय ने लिखा कि श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित होना अपने मिशन के सूत्र वाक्य 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' तथा 'मानव मात्र एक समान' की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण सफलता है।

शान्तिकुञ्ज ने माननीया राष्ट्रपति जी को यहाँ आने और मानवता के उज्ज्वल भविष्य के लिए साथ मिलकर काम करने का निमंत्रण भी दिया है।

कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण के लिए बहुत उपयोगी है पुस्तक

देव संस्कृति संजीवनी

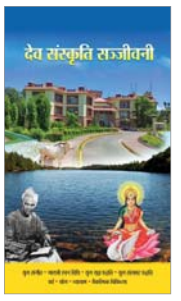

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण के लिए उपयोगी पुस्तक 'देव संस्कृति संजीवनी' का विमोचन किया। यह पुस्तक कुछ विशेषताओं के साथ प्रकाशित की गई है। इसमें कर्मकाण्ड की टिप्पणी के साथ युग संगीत, गायत्री हवन विधि, दीप यज्ञ, युग संस्कार पद्धति, पर्व-त्योहार (बसंत पंचमी, गायत्री जयंती, गुरु पूर्णिमा), योग, वैकल्पिक चिकित्सा एवं नारी जागरण आदि १४ से अधिक विषयों पर व्याख्यान दिए गए हैं। गायत्री हवन विधि में कुछ मंत्रों के उच्चारण को सरल बनाने की दृष्टि से शब्द-विच्छेद किया गया है।

केरल में कई धर्मगुरु और आश्रमों ने गुरुपूर्णिमा पर्व मनाते हुए युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा एवं उनके मिशन के प्रति आस्था व्यक्त की

केरल राज्य में 11 दिन तक भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुए कार्यक्रमों के माध्यम से गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया गया। इन कार्यक्रमों में युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव और उनके द्वारा अवतरित युगशक्ति गायत्री का परिचय दिया गया। अनेक धर्मगुरु एवं उनके अनुयायी प्रभावित हुए एवं गायत्री को घर-घर तक पहुँचाने के अभियान के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। प्रस्तुत हैं कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों के संक्षिप्त विवरण -

श्री व्यास तपोध्यान आश्रमवल्लचाल, कोडक्काड़, कासरगोड में 7 जुलाई को गायत्री यज्ञ संपन्न कर गुरु भक्ति का परिचय दिया। उल्लेखनीय है कि वहां के स्वामी ब्रह्मानंद जी ने शान्तिकुञ्ज में साधना सत्र में भाग लिया हैं। वे युगशक्ति गायत्री को घर-घर पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

श्री नारायण गुरु आश्रम कोझीकोड़ में 9 जुलाई को हुए यज्ञ में आश्रम के तहसील प्रमुख श्री सुधीश केशवपुरी ने गायत्री प्रज्ञा मंडल शाखा का गठन किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश कुमार शर्मा की मुख्य उपस्थिति में कार्यकर्त्ताओं को यज्ञ पौरोहित्य प्रशिक्षण दिया गया। केन्द्रीय प्रतिनिधि ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच, लिंग-रंग भेद से ऊपर उठकर सभी के उत्कर्ष के लिए नैष्ठिक पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी। उन्होंने इसे श्री नारायण गुरु द्वारा शुरू की गई पुनरुद्धार प्रक्रिया की निरंतरता बताया।

10 जुलाई को सभी गुरु भाई-बहनों ने एर्नाकुलम (कोचीन) में 11 कुंडीय गायत्री महायज्ञ संपन्न किया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने यज्ञ महात्म्य एवं गुरु पूर्णिमा विषय पर सारगर्भित संदेश देते हुए प्रेरणाप्रद यज्ञ कराया।

गुरुपूर्णिमा-13 जुलाई के दिन अखंड ज्योति (मलयालम) के संपादक श्री एम.टी. विश्वनाथन ने श्रेष्ठाचार सभागृह कालीकट में कार्यकर्त्ताओं के बीच गुरु पूर्णिमा पर्व का विशेष आवाहन, अर्चन, भजन और गुरु चरण पादुका पूजन का कार्यक्रम रखा। गायत्री दीप महायज्ञ भी हुआ। परम पूज्य गुरुदेव एवं उनकी युग निर्माण योजना के प्रति सभी की आस्था प्रगाढ़ हुई।

17 जुलाई को श्री नारायण गुरु जी की जन्मभूमि तिरुवनंतपुरम और भगवान पद्मनाभ स्वामी की छत्रछाया में गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व बड़े ही श्रद्धा, उल्लास और उमंग के साथ संपन्न हुआ। यूथ हॉस्टल वैली हाउस में आयोजित कार्यक्रम में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने गायत्री मंत्र का वैज्ञानिक प्रतिपादन किया। युवाओं को केरल राज्य में बाल संस्कारशालाएँ चलाने की प्रेरणा दी गई। मलयाली, गुजराती, मारवाड़ी एवं विभिन्न एसोसिएशन के परिजनों ने इसमें भाग लिया।

उपरोक्त कार्यक्रमों में सैकड़ों नए लोगों ने भाग लिया। महिला मंडल संचालिका श्रीमती सुधा अरोड़ा जी ने बहिनों का प्रतिनिधित्व किया।

गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज का श्रेष्ठ प्रदर्शन

गायत्री विद्यापीठ शिक्षण समिति की प्रमुख आद. श्रीमती शेफाली पण्ड्या, प्राचार्य श्री सीताराम सिन्हा एवं उपाचार्य श्री विनय शर्मा के साथ 12वीं कक्षा के वरीयता प्राप्त विद्यार्थी

शान्तिकुञ्ज। हरिद्वार

शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित गायत्री विद्यापीठ का कक्षा 10 एवं कक्षा 12 का (सीबीएसई बोर्ड) परीक्षा परिणाम बहुत उत्साहवर्धक रहा। कक्षा 12 में विद्यापीठ के पाँच छात्र-छात्राओं ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। सर्वोच्च अंक विज्ञान संकाय की हिमानी (95.2%) को प्राप्त हुए। कु. आहुति पण्ड्या ने विज्ञान वर्ग में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए चिकित्सा क्षेत्र के माध्यम से समाज सेवा के लिए जीवन अर्पित करने की इच्छा व्यक्त की। अंकिता, पीयूष चावला, सजल त्यागी एवं सूर्यांश ने 90% से अधिक अंक प्राप्त किए।

आद. शेफाली जी के साथ 10वीं कक्षा के वरीयता प्राप्त विद्यार्थी

कक्षा दस में अनन्या (98.8%) ने सर्वोच्च वरीयता प्राप्त की। हरवंश ने (96%), अंजलि ने (95.8%), चिन्मय ने (93%), हितेश ने (92.4%) तथा अन्वित ने (90.4%) अंक अर्जित किए।

गायत्री विद्यापीठ के अभिभावकद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैल जीजी, विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या, प्रधानाचार्य सीताराम सिन्हा सहित सभी शिक्षक-अधिकारियों ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.8.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23